आज़ादी का
अमृत महोत्सव

अनुविनि
nsfdc

G20
भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

उन्नति

जनवरी–जून, 2022 वर्ष : 02 अंक : 04

"वित्तीय सहायता से मिले स्व-रोजगार
सशक्त हो लक्षित जन, बने उन्नत समाज"

नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन
(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार का उपक्रम)

सूरजकुण्ड अंतरराष्ट्रीय शिल्प मेला 2022 एवं ATDC केंद्र, दिलशाद गार्डन, दिल्ली में ऋण मेला और जागरूकता शिविर की झलकियाँ

भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता कैबिनेट मंत्री डॉ. वीरेन्द्र कुमार जी ने दिनांक 02.04.2022 शनिवार को सूरजकुण्ड अंतरराष्ट्रीय शिल्प मेला 2022 का दौरा किया। इस अवसर पर माननीय मंत्री जी द्वारा एनएसएफडीसी के कार्यों की सराहना की गई व मेले में प्रतिभागियों का हौंसला बढ़ाया।

दिनांक 06.5.2022 को सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के शीर्ष निगमों (NSFDC, NBCFDC, NSKFDC और NHFDC) द्वारा ATDC केंद्र, दिलशाद गार्डन, दिल्ली में ऋण मेला और जागरूकता शिविर आयोजित किया गया था। एससी, बीसी, एसके और विकलांग श्रेणी के प्रशिक्षुओं को ऋण स्वीकृति के अलावा प्रमाण पत्र और रोजगार पत्र प्रदान किए गए।

उन्नति
(छमाही गृह पत्रिका वर्षः 02 अंकः 04)

मुख्य संरक्षक
श्री रजनीश कुमार जैनव
अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री राजेश बिहारी,
मुख्य महाप्रबंधक

संपादक
श्रीमती अन्नु भोगल,
उप महाप्रबंधक/कंपनी सचिव (राजभाषा)

उप संपादक
डॉ. विजय कुमार गुप्ता,
कार्यपालक (राजभाषा)

संपादन सहयोग
श्री रतिकांत जेना,
उप महाप्रबंधक (कौशल प्रशिक्षण)
श्री सपन बरुआ,
उप महाप्रबंधक (परि.डेस्क.पूर्वी क्षेत्र)

नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन
(भारत सरकार का उपक्रम)
14वीं मंजिल, स्कोप मीनार, कोर 1 व 2,
उत्तरी टावर, लक्ष्मी नगर जिला केंद्र,
लक्ष्मी नगर, दिल्ली –110 092

फोन नः 011–22054392/94/96
फैक्स : 011–22054349/95
टोल फ्री नंबर : **1800110396**

ई–मेल : nsfdc.hindideptt@gmail.com
वेबसाइट : https://www.nsfdc.nic.in

विषय सूची

	विषय		पृष्ठ
•	संदेश		1-5
•	अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक की कलम से...		6
•	प्रस्तावना		7
•	संपादकीय		8
•	उप संपादक की कलम से...		9
आलेख			
1.	भाषाई उदारता के दुष्प्रभाव–	डॉ. ईश्वर सिंह	10
2.	स्वतंत्र भारत @ 75– सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता–	डॉ. विजय कुमार गुप्ता	13
3.	सफलता की कहानी–	श्रीमती प्रीती मेहरा	16
4.	पीएम–दक्ष योजना : एक परिचय–	रतिकांत जेना	17
5.	स्वस्थ रहने के मूलभूत उपाय–	डॉ. सत्येन्द्र सिंह	19
6.	भारत सरकार की अग्निपथ योजना–	सुभाष चंद चौहान	22
प्रेरणा			
•	रुकावटें छोटी सी–	अन्नु भोगल	24
संस्मरण			
1.	मेरी लेह–लद्दाख यात्रा –	राजेश बिहारी	26
2.	गदरा रोड, राजस्थान–	रजनीश बनकर	29
सफलता की कहानी			
•	श्रीमती दीप्ति.टी–	केरल	30
साहित्यिकी			
1.	चीनी फेरी वाला–	महादेवी वर्मा	31
कविताएं			
•	जीवन के मौसम–	सपन बरुआ	16
•	स्वच्छता–	रजनी मोंगिया	25
•	इस संगदिल जहां में–	पुखराज मीना	36
•	रिश्तों की बुनियाद	पुखराज मीना	36
•	भारत के माथे की बिंदी यह है अपनी हिंदी–	पंकज	37
विविध			
1.	बैडमिंटन–	कांता कुमारी	39
2.	कार्यालयीन कार्य हेतु उपयोगी हिंदी वाक्य–	रेनू	41
पुस्तकालय			
1.	पुस्तकालय में नई पुस्तकें		43
अन्य गतिविधियां			
1.	निगम का 34वां स्थापना दिवस		44
2.	लखनऊ एवं गोरखपुर में निगम द्वारा प्रतिभागिता–	कलस्टर विभाग	45
3.	राजस्थान पुगल, बीकानेर में टूलकिट वितरण		46
4.	'जागरूकता एवं ऋण पंजीकरण कार्यक्रम', खुर्जा		47
5.	एनएसएफडीसी सीएसआर पहल : सीएसआर विभाग		48
6.	भारतरत्न बाबासाहेब डॉ भीमराव रामजी अम्बेडकर की 131वीं जयन्ती		49
7.	योग कार्यक्रम : 19 अप्रैल 2022		49
8.	हिंदी कार्यशाला का आयोजन : राजभाषा विभाग		50
9.	एनएसएफडीसी की ऋण योजनाएं		-

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। निगम का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए भी संबंधित लेखक स्वयं जिम्मेदार है।

एनएसएफडीसी के बारे में

नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (एनएसएफडीसी) सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के अधीन भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्व में एक केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्रक उद्यम है। एनएसएफडीसी का उद्देश्य वित्तीय सहायता एवं कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से अनुसूचित जाति के व्यक्तियों का सामाजिक–आर्थिक उत्थान कर सामाजिक न्याय की अवधारणा को सशक्त करना है।

दृष्टि (विजन)

अनुसूचित जाति के पात्र व्यक्तियों के सामाजिक–आर्थिक विकास के माध्यम से व्यवस्थित प्रकार से गरीबी को कम करने के लिए चैनलाइजिंग एजेंसियों और अन्य विकास भागीदारों के साथ प्रभावी, उत्तरदायी और सहयोगात्मक तरीके से प्रमुख उत्प्रेरक के रूप में कार्य करना।

लक्ष्य (मिशन)

वित्तीय सहायता के प्रवाह में सुधार और कौशल विकास एवं अन्य नवीन पहलों के माध्यम से अनुसूचित जातियों की समृद्धि को बढ़ावा देना।

प्रमुख उद्देश्य

- अनुसूचित जाति की आबादी के लिए ट्रेडों और अन्य महत्वपूर्ण आर्थिक क्रियाकलापों की पहचान करना।
- अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के कौशल और उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रक्रियाओं को उन्नत बनाना।
- छोटे, कुटीर और ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा देना।
- अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के उत्थान और आर्थिक कल्याण के लिए विशेष कार्यक्रमों को वित्त पोषित करना।
- अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के आर्थिक कल्याण के लिए उनके वित्तीय सहायता के प्रवाह में सुधार करना।
- लक्ष्य समूह को अपनी परियोजना स्थापित करने के लिए परियोजना तैयार करने, प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता के लिए मदद करना।
- भारत और विदेश में पूर्णकालिक व्यावसायिक/तकनीकी पाठ्यक्रमों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनुसूचित जाति के पात्र छात्रों को ऋण प्रदान करना।
- पात्र युवाओं को भारत में वोकेशनल (व्यावसायिक) शिक्षा और प्रशिक्षण कोर्स में अध्ययन करने के बाद कौशल और नियोजनीयता में वृद्धि करने के लिए ऋण प्रदान करना।

डॉ. वीरेन्द्र कुमार
DR. VIRENDRA KUMAR
सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF
SOCIAL JUSTICE AND EMPOWERMENT
GOVERNMENT OF INDIA

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

कार्यालय : 202, सी विंग, शास्त्री भवन,
नई दिल्ली–110115
Office : 202, 'C' Wing, Shastri Bhawan,
New Delhi-110115
Tel. : 011-23381001, 23381390, Fax : 011-23381902
E-mail : min-sje@nic.in
दूरभाष: 011-23381001, 23381390, फैक्स: 011-23381902
ई-मेल: min-sje@nic.in

संदेश

एनएसएफडीसी के 35वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि एनएसएफडीसी इस अवसर पर 'उन्नति' नाम से गृह पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है। किसी भी संस्था की गतिविधियों को जन साधारण तक पहुंचाने एवं राजभाषा हिंदी के विकास में गृह पत्रिका एक सशक्त माध्यम है।

एनएसएफडीसी अनुसूचित जाति वर्ग की उन्नति के लिए सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण के माध्यम से भारतीय समाज में सामाजिक न्याय की धारणा को मजबूती प्रदान कर रहा है। निगम अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस दृष्टि से अनुसूचित जातियों के उत्थान से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों का गृह पत्रिका में प्रकाशन और राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग उल्लेखनीय है।

पत्रिका का यह अंक सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के अंतर्गत एनएसएफडीसी की योजनाओं के बारे में संक्षिप्त परिचय के साथ-साथ कार्मिकों के लेखन द्वारा सृजनशीलता को प्रकट करता है। निःसंदेह पत्रिका में प्रकाशित सामग्री से जनसाधारण को एनएसएफडीसी के विभिन्न क्रियाकलापों एवं गतिविधियों को जानने का सुअवसर भी प्राप्त होगा।

मुझे विश्वास है कि एनएसएफडीसी अपनी गतिविधियों को आगे बढ़ाते हुए राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में भी निरंतर प्रयासरत रहकर अपनी निर्णायक भूमिका निर्वाह करेगा।

इस पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(डॉ. वीरेन्द्र कुमार)

ಎ.ನಾರಾಯಣಸ್ವಾಮಿ
ए. नारायणस्वामी
A. NARAYANASWAMY

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्य मंत्री
भारत सरकार

MINISTER OF STATE FOR
SOCIAL JUSTICE & EMPOWERMENT
GOVERNMENT OF INDIA

D.O No. 575 /MOS(SJ&E-AN)/VIP/2023

संदेश

राष्ट्रीय अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम (एनएसएफडीसी) अनुसूचित जाति के व्यक्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान कर आर्थिक सशक्त बनाने की दिशा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह निगम अनुसूचित जाति के व्यक्तियों को कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध करा कर स्वरोजगार के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। यह ऋण राज्य चैनलाइजिंग एजेंसियों के अलावा सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के द्वारा लक्ष्य समूह तक पहुंचाने में निगम की भूमिका सराहनीय है।

यह जानकर अति-प्रसन्नता हुई कि निगम द्वारा अपने 35वें स्थापना दिवस के अवसर पर **'उन्नति'** नामक गृह पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है जिसमें निगम की गतिविधियों और योजनाओं को सरल-सहज भाषा में उपलब्ध कराया गया है। निगम का यह प्रयास निःसंदेह सराहनीय और महत्वपूर्ण है।

इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी में अपनी गतिविधियों के बारे में जानकारी देकर एनएसएफडीसी एक सराहनीय कार्य कर रहा है।

पत्रिका का यह अंक एनएसएफडीसी की योजनाओं के बारे में संक्षिप्त परिचय के साथ-साथ कार्मिकों के लेखन द्वारा सृजनशीलता को प्रकट करता है। साथ ही, मैं आशा करता हूं कि यह निगम अपनी विभिन्न गतिविधियों, कार्यशालाओं आदि के माध्यम से राजभाषा हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए प्रतिबद्ध है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(ए. नारायणस्वामी)

Office : 623, 'A' Wing, Shastri Bhawan, Dr Rajender Prasad Road, New Delhi-110001, Tel. : 011-23072192, 23072193, Fax : 011-23072194
Residence : 401, Ganga Apartment, Dr. B.D. Marg, New Dehi-110001, Ph.: 011-23310480, 08194-235001
E-mail : mpchitradurgaanswamy@gmail.com, a.narayanaswamy@sansad.nic.in

प्रतिमा भौमिक
PRATIMA BHOUMIK

सत्यमेव जयते

सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR
SOCIAL JUSTICE & EMPOWERMENT
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि एनएसएफडीसी देश भर में अनुसूचित जाति वर्गों के सामाजिक उत्थान का कार्य करने के साथ ही दैनिक कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील है। इस दिशा में एनएसएफडीसी द्वारा अपने 35वें स्थापना दिवस के अवसर पर पर 'उन्नति' नाम से गृह पत्रिका का प्रकाशन किया जाना एक सराहनीय एवं महत्वपूर्ण कदम है।

एनएसएफडीसी सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के अधीन देश में अनुसूचित जातियों के पात्र व्यक्तियों के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान के द्वारा सामाजिक न्याय की स्थापना कर रहा है। इसके अलावा, अनुसूचित जाति की महिलाओं को स्व-रोजगार, वैतनिक रोजगार आदि का भी अवसर प्रदान कर रहा है। समाज के हाशिये के लोगों को मुख्यधारा में लाने के लिए यह जरूरी है कि उनसे जनभाषा में संवाद किया जाए। इसके लिए एनएसएफडीसी अपने अधिकतर कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देकर इसी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

मैं इस पत्रिका के संकलन एवं प्रकाशन कार्य में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े सभी कार्मिकों को हार्दिक बधाई देती हूँ। पत्रिका प्रकाशन के उद्देश्य की सार्थकता एवं सफलता हेतु मेरी शुभकामनाएं।

प्रतिमा भौमिक

(प्रतिमा भौमिक)

Office : 251, 'A' Wing, Shastri Bhawan, Dr Rajender Prasad Road, New Delhi-110001, Tel. : 011-23383757, 23383745, Fax : 011-23074097
E-mail : pratima.bhoumik@nic.in; mosoffice-depwd@nic.in

रामदास आठवले
RAMDAS ATHAWALE

सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्य मंत्री
भारत सरकार

MINISTER OF STATE FOR
SOCIAL JUSTICE & EMPOWERMENT
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

मुझे खुशी है कि एनएसएफडीसी द्वारा अपने 35वें स्थापना दिवस के अवसर पर 'उन्नति' नाम से गृह पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में गृह पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। राजभाषा हिंदी को निरंतर विकसित एवं समृद्ध करना हम सभी का नैतिक एवं राष्ट्रीय दायित्व भी है।

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के नेतृतव में एनएसएफडीसी की योजनाएं अनुसूचित जातियों के उत्थान में अहम भूमिका निभा रही है। इस कार्य को बल देने के लिए निगम ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको से साथ भी समझौता-ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए है जो कि एक सराहनीय कदम है। मेरा ऐसा मानना है कि *'हमें मिलकर उखाड़ देनी है विषमता की जड़'* और इसमें एनएसएफडीसी का योगदान उल्लेखनीय है ।

एनएसएफडीसी का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जाति वर्ग को सामाजिक-आर्थिक रूप से सशक्तिकरण प्रदान करता रहा है। एनएसएफडीसी, संबंधित राज्य सरकार/संघ शासित क्षेत्रों द्वारा नामित चैनलाइजिंग एजेंसियों के माध्यम से लक्ष्य समूहों के लिए, विभिन्न ऋण आधारित योजनाओं तथा शिक्षा ऋण योजना को कार्यान्वित करता है। इसके साथ ही गैर-ऋण आधारित योजनाओं के तहत एनएसएफडीसी द्वारा प्रधान मंत्री दक्षता और कुशलता संपन्न हितग्राही योजना (पीएम-दक्ष) के अंतर्गत पात्र व्यक्तियों को दक्ष और कुशल बनाने हेतु भी सहायता प्रदान की जाती है:

'सबका साथ सबका विकास
दिख रहा है सारा प्रकाश'

मैं निगम के सभी पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी शुभकामनांए प्रेषित करते हुए 'उन्नति' पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

30.1.2023
(रामदास अठावले)

सबका साथ, सबका विकास सबका विश्वास, सबका प्रयास

Room No. : 101, 'C' Wing, Shastri Bhawan, Dr Rajender Prasad Road, New Delhi-110001, Tel. : 011-23381656, 23381657, Fax : 011-23381669

अंजली भावड़ा, भा.प्र.से.
सचिव
Anjali Bhawra, IAS
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय
सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग
Government of India
Ministry of Social Justice & Empowerment
Department of Social Justice & Empowerment

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि एनएसएफडीसी द्वारा अपने 35वें स्थापना दिवस के अवसर पर 'उन्नति' नाम से गृह पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है ।

एनएसएफडीसी सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार का एक महत्वपूर्ण उपक्रम है। यह अपनी विभिन्न योजनाओं के द्वारा अनुसूचित जाति वर्ग को वित्तीय सहायता के साथ ही कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने में मदद कर रहा है। इसके साथ ही लक्ष्य समूह की महिलाओं को स्व-रोजगार प्रदान कर महिला सशक्तिकरण की दिशा में भी अहम भूमिका निभा रहा है।

निगम, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के साथ मिलकर भारत के विभिन्न राज्यों से लक्ष्य समूह को IITF, दिल्ली हाट, सूरजकुंड आदि मेलों में बिना किसी शुल्क के मार्केट प्लेटफार्म उपलब्ध करा कर उनका उत्साह व अनुभव बढ़ाता है।

इस अंक के माध्यम से निगम में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की प्रगति के बारे में तो पता चलता ही है, साथ ही यह अंक पाठकीय दृष्टि से ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय है।

मैं, एनएसएफडीसी के सभी पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी शुभकामनांए प्रेषित करते हुए पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करती हूं।

अंजली भावड़ा

(अंजली भावड़ा)

Room No. 604, 'A' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi-110 001, Tel : 011-23382683, 23389184, Fax : 011-23385180
Mail : secy.wel@nic.in

रजनीश कुमार जैनव
अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक

अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक की कलम से ...

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में सबका साथ और सबका विकास जैसी अवधारणा तभी सार्थक होती है जब सामाजिक न्याय की प्रक्रिया सुचारु रूप से कार्यरत हो। इस दृष्टि से हमारा निगम समाज के वंचित वर्गों के सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति को बढ़ावा देकर राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है। एक तरफ हमारा निगम वंचित वर्गों को वित्तीय सहायता देकर उन्हें आत्मनिर्भर बना रहा है, वहीं दूसरी ओर कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से युवाओं के लिए रोजगार और स्व–रोजगार के अवसर भी उत्पन्न कर रहा है। लक्ष्य समूह की उन्नति के साथ ही हमारा निगम राजभाषा हिंदी की उन्नति के माध्यम से देश को एकता के सूत्र में बांधने हेतु प्रयासरत है।

कोई भी योजना तब ज्यादा प्रभावी हो जाती है जब उसे लाभान्वित होने वाले वर्ग की भाषा में प्रस्तुत किया जाए। इससे लोगों को उस योजना के बारे में सुगम जानकारी प्राप्त होती है साथ ही योजना का फायदा भी अधिकाधिक लाभार्थियों तक पहुंचाया जा सकता है। इस उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग और हमारे निगम के उद्देश्यों को लक्ष्य समूह के बीच उनकी ही भाषा में पहुंचाने के लिए निगम की निगम अपने 35वें स्थापना दिवस के अवसर पर 'उन्नति' नाम से छमाही पत्रिका का प्रकाशन करने का निर्णय लिया। इसके प्रकाशन पर हर्ष प्रकट करते हुए संपादक मंडल के प्रति आभार प्रकट करता हूं।

मुझे आशा है कि हम सभी राजभाषा हिंदी के प्रयोग में पूरे मनोयोग से निष्ठापूर्वक कार्य करते हुए अपने निगम के लक्ष्य समूह की उन्नति के साथ–साथ राजभाषा कार्यान्वयन की उन्नति को भी अग्रणी रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

रजनीश

(रजनीश कुमार जैनव)

राजेश बिहारी
मुख्य महाप्रबधंक

प्रस्तावना

हमारे निगम के 35वें स्थापना दिवस के अवसर पर गृह पत्रिका **'उन्नति'** के इस नवीन अंक के माध्यम से आप सभी के साथ अपना विचार साझा करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। राजभाषा हिंदी में प्रकाशित होने वाली हमारी यह छमाही गृह पत्रिका कार्मिकों की सृजनात्मकता के साथ–साथ छमाही के दौरान निगम में होने वाली प्रमुख गतिविधियों को जानने–समझने का एक प्रमुख माध्यम है।

'उन्नति' के रूप में पत्रिका का नामकरण हमारे निगम द्वारा वित्तपोषित लक्ष्य समूहों की उन्नति और कौशल प्रशिक्षण द्वारा युवाओं की उन्नति के साथ ही राजभाषा हिंदी की उन्नति को भी समाहित करता है और इस रूप में यह नामकरण अधिक सार्थक प्रतीत होता है।

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी के प्रयोग पर जोर दिया गया है। इस दृष्टि से हमारे लिए यह जरूरी है कि हम अपने दैनिक कामकाज को मूल रूप से हिंदी में करें और दूसरों को भी प्रेरित करें। आज के तकनीकी युग में हिंदी में काम करना बहुत आसान होता जा रहा है यदि हम अपनी भाषा के प्रति थोड़ा सा सम्मान का भाव पैदा करें तो यह काम और आसान हो जाता है।

आज हिंदी राजभाषा और संपर्क भाषा के साथ–साथ वैशविक भाषा के रूप में भी स्थापित होती जा रही है। देखा जाए तो विश्व में चीनी भाषा (मंदारिन), स्पैनिश और अंग्रेजी के बाद हिंदी का चौथा स्थान है। आज हिंदी भारत के बाहर चीन, जापान, जर्मनी, दक्षिण अफ्रिका, मॉरिशस, यमन, त्रिनाड एंड टोबैगो, कनाडा आदि देशों में भी बोली जाती है एवं अध्ययन–अध्यापन कार्य भी चल रहा है।

आप सभी के सम्मलित प्रयास और सहयोग से निगम की पत्रिका **'उन्नति'** का संकलन एवं प्रकाशन हो रहा है। मैं आशा करता हूं कि हम इसी प्रकार राजभाषा हिंदी के प्रति अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वाह करते हुए नई उपलब्धियों का सफर जारी रखेंगे।

मैं पत्रिका के संरक्षक, संपादक मंडल, और पत्रिका में लेख/विचार, कहानी, कविता आदि भेजने वाले सभी लेखकों को बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

राजेश बिहारी

राजेश बिहारी

अन्नु भोगल
उप महाप्रबधंक (राजभाषा)

संपादकीय

राजभाषा संबंधी कार्य करते हुए मुझे हिंदी के कार्यान्वयन व्यवस्था को और समीप से समझने का अवसर मिला है। मेरा विश्वास है कि राजभाषा का विकास हमारे दृढ़ इच्छाशक्ति से ही संभव है। राजभाषा हिंदी का विकास हमारे द्वारा हिंदी पढ़ने और मूल रूप से हिंदी में लिखने से ही किया जा सकता है और यह हम सभी के प्रयासों से ही संभव है।

निगम की गृह पत्रिका पिछले कई वर्षों से 'अनुविनि गृह पत्रिका' के नाम से प्रकाशित की जा रही थी। इस विषय में निगम द्वारा वंचित समूहों के लिए किए जा रहे विकास कार्यों को ध्यान में रखते हुए इस पत्रिका का नया नाम **'उन्नति'** रखा गया है। इस पत्रिका का प्रकाशन इसी उद्दश्य से प्रेरित है।

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग सरल एवं सहज रूप से होना चाहिए और मूल रूप से हिंदी में पत्राचार को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। खुशी की बात है कि हमारे लगभग सभी अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी जानते ही नहीं बल्कि परोक्ष रूप से प्रयोग में भी लाते हैं। मुझे आशा है कि यह पत्रिका कार्मिकों की हिंदी में रूचि लाएगी और अधिकाधिक काम हिंदी में करने हेतु प्रेरित करेगी।

निगम के 35वें स्थापना दिवस के अवसर पर 'उन्नति' पत्रिका का नया अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार खुशी हो रही है। हमारे निगम में कार्मिकों की सीमित संख्या को देखते हुए **'उन्नति'** का यह अंक उत्साहित करने वाला है। अपितु अगले अंकों में निगम से प्रतिभागिता और जोश से की जाएगी इसकी आशा करती हूं।

इस पत्रिका को और रोचक बनाने के लिए हमें आपके सुझावों और प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी। आशा है कि सुधी पाठकों को यह अंक पसंद आएगा।

(अन्नु भोगल)

डॉ. विजय कुमार गुप्ता
कार्यपालक (राजभाषा)

उप संपादक की कलम से...

'उद्यमेन हि सिध्यन्ति' अर्थात उद्यम से ही कार्य सफल होते हैं, केवल मनोरथ करने से नहीं। इस सूत्र पर पहल करते हुए हमारा निगम सामाजिक न्याय के लक्ष्य को हासिल करने के लिए युवाओं को केवल वित्तीय सहायता ही नहीं प्रदान कर रहा है बल्कि कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से उनके अंदर के उद्यमशीलता को भी बढ़ावा दे रहा है। कहना न होगा कि इससे लक्ष्य समूह की सामाजिक–आर्थिक उन्नति के साथ ही 'आत्मनिर्भर भारत' का स्वप्न भी साकार हो रहा है।

सामाजिक न्याय का लक्ष्य सामाजिक एवं व्यक्तिगत बदलाव से ही संभव है जिसके लिए अपनी भाषा का ज्ञान और प्रयोग एक अनिवार्य पहलू है। महात्मा गाँधी इसी संदर्भ में कहते हैं, *"...समाज का सुधार अपनी भाषा से ही हो सकता है। हमारे व्यवहार में सफलता और उत्कृष्टता भी हमारी अपनी भाषा से ही आएगी।" भारतेन्दु ने तो यहां तक कहा कि 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल'* अर्थात अपनी भाषा की उन्नति और प्रचार–प्रसार में ही किसी राष्ट्र की उन्नति निहित है।

उल्लेखनीय है कि यहां निज भाषा का अभिप्राय भारत देश की भाषा से है। नागरी लिपि में लिखी जाने वाली खड़ी बोली ही हिंदी है। जो व्यापक जनमानस की आकांक्षाओं को अभिव्यक्ति देने के साथ ही स्वाधीनता आंदोलन के दौरान अखिल भारतीय स्तर पर पूरे जनमानस को एक सूत्र में पिरोने का कार्य भी किया। यही कारण है कि आज़ादी के बाद संविधान में इसे राजभाषा का दर्जा दिया गया है और प्रशासनिक काम–काज में इसके अधिकाधिक प्रयोग पर जोर दिया गया है।

निगम के 35वें स्थापना दिवस के अवसर पर लक्ष्य समूह के साथ ही राजभाषा की उन्नति संबंधी कार्यों को ध्यान में रखते हुए ही हमारी पत्रिका का नामकरण 'उन्नति' रखा गया है। यह कहां तक सार्थक और सफल हो पाया है इसका निर्णय पाठकगण ही बेहतर कर पाएंगे।

'उन्नति' के इस अंक में विविध विषयों पर विचार प्रधान लेख के साथ ही कविता/कहानी, निगम की प्रमुख गतिविधियां, राजभाषा संबंधी गतिविधियां इत्यादि को स्थान दिया गया है। उम्मीद है कि यह अंक पाठकीय दृष्टि से संग्रहणीय होगा।

(डॉ. विजय कुमार गुप्ता)

भाषाई उदारता के दुष्प्रभाव

डॉ. ईश्वर सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक–राजभाषा
हिन्दुस्तान पेट्रोलियम
कॉर्पोरेशन लिमिटेड–दिल्ली

किसी भी भाषा की समृद्धि के लिए यह जरूरी है कि वह अपने दामन को फैलाकर दूसरी भाषा के शब्दों को स्वीकार करे, उन्हें आत्मसात करे और इस्तेमाल करे। यह भाषा के विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया भी है। शब्दों की उत्पत्ति परिवेश सापेक्ष होती है, अर्थात किसी विशेष परिस्थिति, संस्कृति, पर्यावरण, वातावरण, जलवायु और परिवेश में विशेष किस्म के शब्द जन्म लेते हैं। ये शब्द दूसरी या बदली हुई परिस्थिति, संस्कृति, पर्यावरण, वातावरण, जलवायु और परिवेश में रहने वाले लोगों के लिए अनुपयुक्त या अनजान हो सकते हैं, लेकिन जब इन दोनों अलग–अलग प्रकृतियों के लोग एक दूसरे के संपर्क में आते हैं, तब एक भाषा के शब्द दूसरी भाषा में पहुंच जाते हैं और इनका उपयोग दूसरे भाषा भाषी भी करना प्रारंभ कर देते हैं। भाषाई शुद्धतावादी इन शब्दों से परहेज करते हैं तो उदारवादी इन्हें अपनाना चाहते हैं। वस्तुत, इस प्रकार दूसरी भाषा से चलकर आए शब्दों की उपयोगिता और स्वीकार्यता सदैव स्वागत योग्य पहल होनी चाहिए। इससे न केवल भाषा का विस्तार होता है, अपितु एक परिस्थिति, संस्कृति, पर्यावरण, वातावरण, जलवायु और परिवेश के लोगों को दूसरी परिस्थिति, संस्कृति, पर्यावरण, वातावरण, जलवायु और परिवेश को समझने में भी मदद मिलती है।

मैं, कभी भी भाषा में अतिशुद्धतावादी दृष्टिकोण का समर्थक नही रहा हूं। मेरा मानना है कि भाषा का विस्तार शुद्धतावादी दृष्टिकोण से मुक्ति पाने के बाद ही हो सकता है, इसलिए हिंदी में बहुत सी दूसरी भाषाओं से आने वाले शब्दों को स्वीकार करने की हिमायत की जानी चाहिए। भारतवर्ष एक ऐसा देश है जिसमें भिन्न–भिन्न भाषाएं, संस्कृति, धर्म, पर्यावरण, जलवायु, वातावरण और परिवेश समाहित हैं। उसी के अनुसार अलग–अलग भाषाओं की शब्दावली भी अलग–अलग है। यदि हम दूसरे क्षेत्र और प्रांत की भाषा के शब्दों को हिंदी में स्थान देंगे, तो हम हिंदी को देश की सभी प्रांतीय भाषाओं के निकट ले जाने में और उन से जोड़ने में सफल हो सकेंगे। जिस प्रकार भारत की लगभग सभी भाषाएँ, खुद को संस्कृत से जोड़कर देखती हैं और उस जुड़ाव में गौरव की अनुभूति करती हैं, उसी प्रकार हिंदी में भी यदि सभी भाषाओं के प्रचलित शब्दों को स्वीकार किया जाने लगे और उन्हें हिंदी शब्दों के पर्याय के रूप में देखा, पढ़ा और समझा जाने लगे, तो हिंदी को देश के उन राज्यों में स्वीकार्यता मिलने लगेगी, जो आज हिंदी को अपनी प्रांतीय भाषा के विरोधी के रूप में देखते हैं।

हिंदी को राष्ट्रभाषा या अंतरराष्ट्रीय भाषा बनाने के लिए यह जरूरी है उसकी स्वीकार्यता देश के अंदर, हिंदीतर भाषी राज्यों में, बढ़ाई जाए। इसके लिए बहुसंख्यक हिंदी भाषाविदों को आगे आकर इस पहल का नेतृत्व करना होगा, ताकि हम देश के विभिन्न हिंदीतर प्रांतों में बोले जाने वाली भाषा के शब्दों को हिंदी में स्थान दें, उन्हें अपनाएं और प्रयोग करें। इससे देश की भाषाई एकता को भी बल मिलेगा।

धीरे–धीरे अंग्रेजी के बहुत से शब्द भारतीय भाषाओं में और विशेष रूप से हिंदी में आ गए हैं। इसका एक कारण तो यह है कि बहुत से उत्पादों का आविष्कार ही पश्चिम में हुआ है और जब ये उत्पाद भारत में आए तो अपने साथ अपने अंग्रेजी के ही नाम भी लेकर आए, जिन्हें हमने ज्यों का त्यों अपना लिया। उदाहरण के लिए मोबाइल, कंप्यूटर, टाई, कोट, टीवी, टेलीफोन आदि आदि। जब इनका इस्तेमाल भारतीय परिवेश में बढ़ा तो लोग इन्हें इनके मूल नाम, यानी अंग्रेजी नामों से ही जानने लगे। ऐसे में यह अनावश्यक होगा कि हम उनके हिंदी नाम गढ़ें और फिर उनका इस्तेमाल करना प्रारंभ करें। यह एक निरर्थक प्रयास होगा जिसका किसी को लाभ नहीं होगा। हमें संज्ञावाचक सर्वनाम की तरह से इन्हें स्वीकार कर लेना चाहिए और उन्हें इसी रूप में

स्वीकार कर भी लिया गया है। अतरू हमें अंग्रेजी या अरबी भाषा से आए शब्दों की हिंदी में शब्दशः माँग तब तक नहीं करनी चाहिए, जब तक उसके प्रयोग से हमारे कथ्य में कोई भ्रम उत्पन्न न होता हो।

इस सारी उदारता के बीच हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि कहीं हम अपने ही पाले में गोल न कर दें। दूसरी भाषाओं के शब्दों को स्वीकारने की प्रक्रिया में हम अपनी भाषा के शब्दों की उपेक्षा न कर दें। यही आज हो रहा है। विशेष रूप से अंग्रेजी भाषा के शब्दों के आकर्षण में हम अपनी भाषा के सरल शब्दों को भी अंग्रेजी के शब्दों से प्रतिस्थापित करते जा रहे हैं। हमें अपने पाले की सुरक्षा हर समय सुनिश्चित करनी होगी। हम दूसरी भाषा के शब्दों को तो स्वीकार करें लेकिन उन्हें अपनी भाषा के शब्दों का स्थान न दें। कहने का तात्पर्य यह है कि हम भाषा के मामले में उन शब्दों को अपनाने में पूरी उदारता दिखाएं जो हमारी भाषा में नहीं हैं, हमारे परिवेश, पर्यावरण, वातावरण और संस्कृति में नहीं हैं, किंतु जो शब्द हमारे पास उपलब्ध है और प्रचलन में हैं उनकी जगह पर हम दूसरी भाषा और विशेषकर अंग्रेजी भाषा के शब्दों को प्रयोग न करें। इससे हिंदी के शब्दों का प्रयोग कम हो जाएगा और वे धीरे–धीरे दुरूह हो जाएंगे और फिर विलुप्त हो जाएंगे। जो शब्द प्रयोग से बाहर हो जाते हैं उनका अर्थ आम जनता की समझ में नहीं आता और इस प्रकार वे दुरूह होते हुए विलुप्त हो जाते हैं फिर उनका अर्थ समझने के लिए हमें खुद शब्दकोश का सहारा लेना पड़ता है।

आम बोलचाल की भाषा में, टी वी की भाषा में, सोशल मीडिया की भाषा में और अखबारों की भाषा में जिस प्रकार अंग्रेजी के शब्दों को जबरन डाला जा रहा है, वह चिंता का विषय है जिस पर सभी हिंदी भाषी विद्वानों को विचार करना चाहिए। हम लोग अब 'सर्वोच्च न्यायालय' को 'सुप्रीम कोर्ट' और 'उच्च न्यायालय' को 'हाईकोर्ट' लिखने और पढ़ने के आदी होते जा रहे हैं। हम धीरे–धीरे 'समस्या' को 'प्रॉब्लम' मानने लगे हैं और 'बाजार' के बजाय 'मार्केट' जाने लगे हैं। अब हमारे हम 'भाई बहन' नहीं रहे अपितु 'ब्रदर एंड सिस्टर' बन गए हैं। हमारे 'माता–पिता' 'पेरेंट्स' बन गए हैं और जो 'पिताजी' हुआ करते थे वे 'फादर' बन गए और 'माँ' जैसे पावन शब्द को हम 'मदर' जैसे शब्द से प्रतिस्थापित करते जा रहे हैं। अब 'धर्मपत्नी' पूरी तरह 'वाइफ' बन कर रह गई है और 'पति' केवल 'हस्बैंड' के नाम से जाना जाने लगा है। 'कमीज' पूरी तरह से 'शर्ट' में बदल गई है और 'नाश्ते' का स्थान 'ब्रेकफास्ट' ने ले लिया है। अब 'चेहरा' 'फेस' बनता जा रहा है और 'शरीर' 'बॉडी' जिसमें 'दर्द' से ज्यादा 'पेन' होता है। अब लोगों की न तो 'मृत्यु' होती है और न ही 'स्वर्गवास' अपितु अब उनकी 'डैथ' होती है या वे 'एक्सपायर' होते हैं। वे 'बीमार' नहीं होते बल्कि 'सिक' होते हैं और 'संक्रमण' के स्थान पर 'इंफेक्शन' होता है। 'कुर्सी' 'मेज' की जगह अब 'चेयर' व 'टेबल' ने ले ली है। क्रिकेट खेलते समय अब 'गेंद' धीरे–धीरे 'बॉल' और 'बल्ला' 'बैट' बनता जा रहा है। यही नहीं, 'वापिसी' की जगह अब खिलाड़ी 'कम बैक' करने लगे हैं। अब कोई 'सुबह की सैर' पर शायद ही जाता हो, जो जाता है, 'मॉर्निंग वॉक' पर ही जाता है। 'अध्यापक या शिक्षक', 'प्राचार्य' और 'विद्यालय' को तो हम कब का 'टीचर', 'प्रिंसिपल' और 'स्कूल' बना चुके हैं। 'धन्यवाद' को भी हम स्थायी रूप से 'थैंक्स' या 'थैंक यू' बना चुके हैं। अब हमारे यहाँ 'श्री' और 'श्रीमती' नहीं होते उनका स्थान 'मिस्टर' और 'मिसेज' ने ले लिया है। अब 'परिवार' खत्म हो गए हैं और 'फैमिली' ने जन्म ले लिया है। 'सहायता' या 'मदद' के स्थान पर हम 'हैल्प' मांगने लगे हैं। हालात ऐसे हैं कि सप्ताह के दिन हम 'इतवार', 'सोमवार' के स्थान पर 'संडे', 'मंडे', रंगों के नाम 'ब्लैक', 'व्हाइट', 'यैलो', 'रैड' से और शरीर के अंग भी अंग्रेजी के नामों से पहचानते हैं जबकि न तो ये किसी दूसरी संस्कृति या परिवेश से आयातित हैं और न ही हिंदी में इनके सहज सुलभ नाम अनुपलब्ध हैं। हद तो ये है कि हम 'नियम व शर्तें लागू' जैसे सरल वाक्यांश के स्थान पर 'टीएंडसी एपलाई' जैसा जटिल वाक्यांश लिखना पसंद करते हैं।

प्रश्न यह है कि क्या उपरोक्त अंग्रेजी शब्दों के लिए हमारे पास सुपरिचित एवं आम तौर पर प्रचलित हिन्दी के शब्द नहीं हैं? हम सरल, सहज और सुबोध हिंदी शब्दों के बजाय अंग्रेजी शब्दों को वरीयता क्यों देते हैं? क्या ऐसा करने से हिन्दी भाषी लोगों की अभिव्यक्ति से हिन्दी के सदा से प्रचलित शब्द गायब नहीं हो जाएंगे? क्या हम "फोन डिसकनेक्ट कर दिया" के बदले "फोन काट दिया", "फोन रख दिया", या "फोन बंद कर दिया" जैसे वाक्य प्रयोग में नहीं ले सकते? हमारा मोबाइल 'बंद' भी तो हो सकता है, वह 'स्विच ऑफ' ही क्यों होता है? हम पंखा 'चालू' भी तो कर सकते हैं उसे 'ऑन' ही क्यों किया जाता है? लब्बोलुआब यह है कि इस प्रकार के हजारों शब्द हैं जो हमारे पास अपनी भाषा में मौजूद हैं, प्रचलन में हैं, जिन्हें बोलने और समझने में कोई समस्या नहीं है किंतु हमने उनके समतुल्य अंग्रेजी के पयार्य ढूँढ लिए हैं और धड़ल्ले से उनका इस्तेमाल कर रहे हैं। समस्या यह है कि हम अपने भाषाई गौरव के प्रति उदासीन हो गए हैं और अपनी भाषा के प्रति श्रेष्ठता या सम्मान का भाव नहीं रखते।

कुछ विद्वान तर्क देते हैं कि यदि उपरोक्त अंग्रेजी के शब्दों को सब आसानी से समझ लेते हैं तो उन्हें प्रयोग करने में क्या हानि है? मैं इस लेख के प्रारंभ में ही कह चुका हूँ कि मैं भाषा की अतिशुद्धता का पक्षधर नहीं हूँ किंतु मैं इस बात का भी पक्षधर

नहीं हूँ कि हम अपनी भाषा के प्रति आत्मगौरव का भाव भी न रखें। हमें अपनी भाषा के प्रयोग को प्राथमिकता तो अवश्य देनी चाहिए। जहाँ ऐसा करने में कठिनाई है, शब्द दुरूह हैं या जहाँ हमें शब्द गढ़ने की आवश्यकता पड़ती है, वहाँ हमें दूसरी भाषा के शब्दों को अपनाने में कोई गुरेज नहीं करना चाहिए। हम शाखाओं को मजबूत करें किंतु जड़ों की उपेक्षा हरगिज न करें।

हिंदी को समृद्ध करने के लिए अंग्रेजी के अंधाधुंध प्रयोग की हिमायत करने से पहले हमें यह भी सोचना चाहिए कि भाषा की समृद्धि के नाम पर हम अपनी परंपरा और संस्कृति को कमजोर नहीं कर सकते। स्वयं अंग्रेजी भाषा ने दुनिया की अनेक भाषाओं की शब्द संपदा को स्वीकार किया है किंतु अपनी संस्कृति और परंपरा की कीमत पर नहीं, न ही उन्होंने इसके लिए अपने प्रचलित शब्दों का त्याग किया है। हम भारतवासी अपने चाचा को अंकल कहने लगे किंतु अंग्रेजों ने ताऊ, ताई, बुआ, फूफा, मामा, मामी जैसे रिश्तों के लिए हिंदी के शब्दों को स्वीकार नहीं किया। जिस प्रकार हम हिंदी बोलते समय 'बट', 'एंड', 'यू नो', 'ऑलरेडी' का इस्तेमाल करते हैं उसी प्रकार अंग्रेजी बोलते हुए बीच बीच में हिंदी के शब्दों का इस्तेमाल नहीं करते, आखिर क्यों? हम अंग्रेजी की शुद्धता की इतनी चिंता क्यों करते हैं और अपनी भाषा की शुद्धता के साथ घातक समझौता करने में हमें कोई संकोच क्यों नहीं होता?

अंग्रेजी के आकर्षण का एक विकृत रूप तब देखने को मिलता है जब हम अपने पौराणिक पात्रों के नामों का उच्चारण करते हैं। हमें 'कृष्ण' को 'कृष्णा', 'अर्जुन' को 'अर्जुना', 'भीम' को 'भीमा', 'लक्ष्मण' को 'लक्ष्मणा', 'रावण' को 'रावणा', 'कुंभकर्ण' को 'कुंभकर्णा' पुकारने में कभी संकोच नहीं होता। हम 'रामायण' को 'रामायणा' और 'महाभारत' को 'महाभारता' बोलते हुए हमारे मन में जो अंग्रेजी की श्रेष्ठता के बोध है वह हमारी नजरों से उस घातक प्रभाव को छुपा लेता है जो धीरे धीरे हमारी आने वाली पीढ़ी के ज्ञान पर पड़ रहा है। जिन बच्चों ने बचपन से अपने आराध्य और पौराणिक नामों को गलत सुना और गलत बोला है वे जीवन भर यही गलती करते रहेंगे और आने वाली पीढ़ी को भी यही सिखा कर जाएंगे। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि आने वाली पीढ़ियाँ वही सीखेंगी, जो हम उनके लिए छोड़ कर जाएंगे। साथ ही यह भी कि शब्द, भाषा का आधार हैं। यदि हिंदी भाषा से हिंदी के शब्द अनावश्यक रूप से निष्कासित किए जाएंगे और उनकी जगह अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग थोपा जाएगा या अंग्रेजी के आकर्षण में हम अपने शब्दों को गलत तरह से बोलेंगे, तो हम न केवल अपनी भाषा को कमजोर कर देंगे अपितु अपनी संस्कृति, विरासत और इतिहास के साथ भी अन्याय कर देंगे। दूसरों के माता पिता का सम्मान करना तभी सराहनीय, वंदनीय और अनुकरणीय है जब हम पहले अपने माता पिता का सम्मान करें।

★★★★★★★★★★★

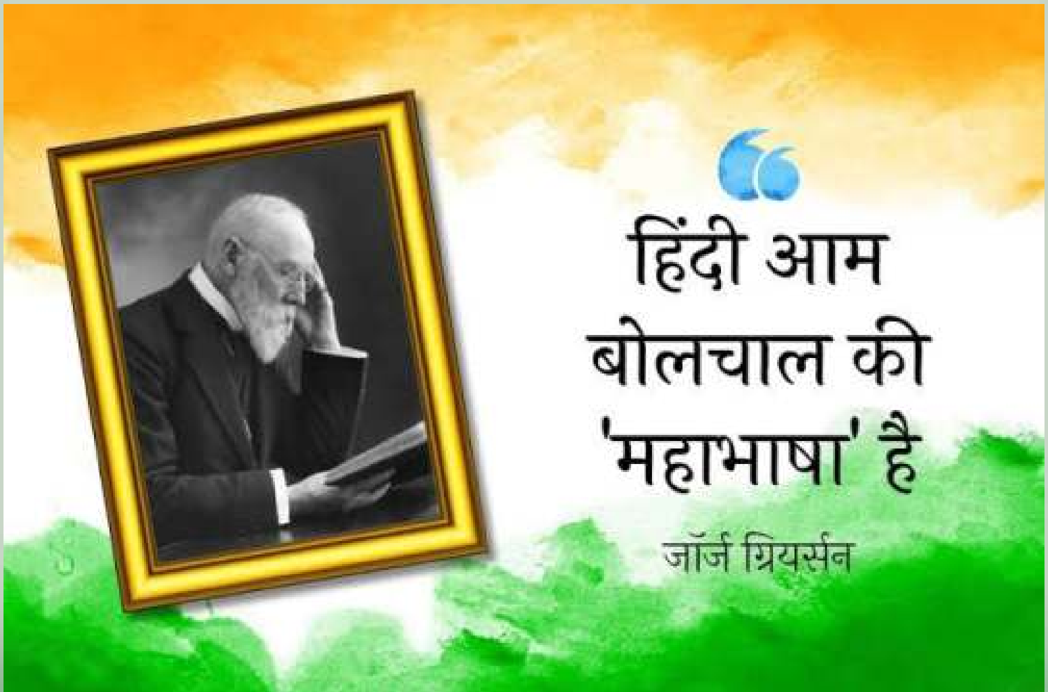

स्वतंत्र भारत @ 75- सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता

Independent India @ 75 – self Reliance with Integrity

(सर्तकता जागरूकता सप्ताह के दौरान प्रथम पुरस्कृत निबंध)

डॉ. विजय कुमार गुप्ता
कार्यपालक (राजभाषा)

"सत्य के प्रति निष्ठा व्यक्ति के आत्मबल को मजबूत करती है जो अंततः उसे आत्मनिर्भरता की ओर प्रेरित करता है।"

– महात्मा गांधी

उपरोक्त कथन में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने सत्य के प्रति निष्ठावान होने पर बल दिया है और आत्मनिर्भरता के लिए वे एक तरह से इसे अनिवार्य मानते हैं। आज 21वीं सदी में जब हमारे प्रधानमंत्री आत्मनिर्भर भारत का स्वप्न देख रहे हैं तो इस दृष्टि से सत्यनिष्ठा की अहमियत बढ़ जाती है। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर इस विषय पर चर्चा करना इसे और भी प्रासंगिक बनाता है। यही कारण है कि 16 अक्तूबर से 01 नवंबर, 2021 के दौरान मनाये जाने वाले सतर्कता जागरूकता सप्ताह के लिए भारत सरकार ने उपर्युक्त विषय को निर्धारित किया है।

सत्यनिष्ठा से आशय सत्य के प्रति निष्ठावान होना है अर्थात जब कोई व्यक्ति बाह्य दबाव में न आकर अपने आंतरिक शक्ति के बल पर अंत तक सच के प्रति निष्ठावान बना रहता है। सामान्य तौर पर सत्यनिष्ठा को ईमानदारी के रूप में समझा जाता है। किंतु यह इससे अलग है। उदाहरण के तौर पर यदि आप किसी सार्वजनिक पद पर है और कोई व्यक्ति अपने हित के लिए रिश्वत देता है और आप मना कर देते हैं तो आप एक ईमानदार अधिकारी है। लेकिन एक ऐसी स्थिति जहां आपको कोई देख न रहा हो और आपको यह पता हो कि यदि आप रिश्वत ले भी लेते हैं तो किसी को पता नहीं चलेगा, तो ऐसी स्थिति में आपके सत्यनिष्ठ होने की पहचान होती है। आज भारत आज़ादी का 75वां वर्ष मना रहा है और भारत को एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने पर जोर दिया जा रहा है। ऐसे में सत्यनिष्ठा ही वह मूल्य है जो भारत की प्रगति को सुचारू रूप से आगे बढ़ाने में मदद कर सकता है। इस बात को भारत के आज़ादी के आंदोलन से भलिभाँति समझा जा सकता है।

गौरतलब है कि भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के दौरान ब्रिटिश उपनिवेशी शासन के समक्ष जो सबसे बड़ी बाधा थी, वह थे महात्मा गांधी । महात्मा गांधी ने सत्य के प्रति निष्ठा और आग्रह के बल पर समूचे जनमानस को एकजुट किया और उन्हें गहरे स्तर तक प्रभावित भी किया। यही कारण था की गांधी जी के आह्वान पर लोग अपनी नौकरियॉ छोड़कर, पढ़ाई छोड़कर, व्यवसाय आदि छोड़कर स्वाधीनता आंदोलन में कूद पड़े। इनके अलावा भगत सिंह, सुभाषचन्द्र बोस, अंबेडकर, वल्लभभाई पटेल आदि स्वतंत्रता सेनानियों ने देश के प्रति अपनी सत्यनिष्ठा के कारण ही अपने प्राण न्योछावर तक करने को तैयार थे। नैतिक मूल्यों के प्रति गहरे स्तर तक लगाव और लोगों के कल्याण के प्रति तत्परता आदि मूल्यों ने ही भारत को अंग्रेजों के चंगुल से आजाद कराया और भारत को आज़ादी मिली।

किंतु आज़ादी के जिन सपनों को लेकर हमारे स्वतंत्रता सेनानी आगे बढ़े वो सपने आज़ादी के बाद भी पूरी न हो सकी। आज़ादी के बाद गोरे अंग्रेज की जगह काले अंग्रेज आ गए। सामंतवाद, भ्रष्टाचार, लालफीताशाही ने न सिर्फ असंतुलित विकास की समस्या को पैदा किया बल्कि विकास की प्रकिया को भी अवरुद्ध किया। 1991 के दशक के उदारीकरण की प्रक्रिया के बाद लाइसेंसराज, क्षेत्रवाद आदि की प्रणाली को कमजोर किया है किंतु भ्रष्टाचार की समस्या में गुणात्मक बदलाव लाना अभी भी शेष है।

सत्यनिष्ठा के फायदे:

किसी भी देश और समाज के विकास के लिए वहाँ के प्रशासनिक तंत्र का कुशलतम एवं इष्टतम योगदान अपेक्षित है। यदि प्रशासनिक तंत्र अपने दायित्वों का निर्वहन ठीक प्रकार से करने में असमर्थ रहता है तो इसका प्रत्यक्ष प्रभाव आम जनता के हितों पर पड़ता है। अतः सार्वजनिक पदों पर बैठे लोगों का सत्यनिष्ठ होना बहुत जरूरी है। यहीं कारण है कि द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग (2nd ARC) ने प्रशासन में सत्यनिष्ठा पर खास जोर दिया है। वर्तमान में भारत सरकार द्वारा 'मिशन कर्मयोगी' का संचालन इसी उद्देश्य से किया जा रहा है। सत्यनिष्ठा से निम्नलिखित बदलाव आते हैं –

1. आम जनता का विश्वास प्रशासन में बढ़ता है।
2. प्रशासनिक अधिकारी आम जनता का सक्रिय योगदान प्राप्त करता है।
3. सरकारी कार्य समय से एवं प्रभावी तरीके से पूर्ण होता है।
4. प्रशासनिक दयित्वों का निर्वहन सत्यनिष्ठा से करने से सरकारी योजनाओं का कार्यान्वयन समुचित तरीके से होता है और जिस वर्ग को ध्यान में रखकर योजना बनाई गई है उसे उसका फायदा पहुंचना सुनिश्चित होता है।

सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता:

आत्मानिर्भर होने की पहली कसौटी यह है कि व्यक्ति और समाज के सभी तबके तक बिजली, पानी, सड़क, शौचालय, अस्पताल, शिक्षा एवं अन्य अवसंरचनाओं तक पहुंच हो। उनके विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण हो सके, आने वाली बाधाओं को कम किया जा सके। यदि हम गौर करें तो प्राचीन काल से ही भारतीय ग्रामीण व्यवस्था आत्मनिर्भर थी। वह अपने आवश्यकता की चीजों का स्वयं उत्पादन करती थी और अधिशेष का निर्यात भी कर देती थी। किंतु ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के दौरान सरकार की शोषणकारी नीतियों एवं भारत से ब्रिटेन धन के बहिर्गमन के कारण भारतीय शिल्प एवं कुटीर उद्योग और ग्रामीण अर्थव्यवस्था अस्त व्यस्त हो गई। एक तरफ ब्रिटेन का औद्योगीकरण हो रहा था वहीं भारत में विऔद्योगीकरण की प्रक्रिया चल रही थी। किसान मजदूर बन रहे थे । कुल मिलाकर, ब्रिटिश अधिकारियों का भारत के प्रति सत्यनिष्ठा के अभाव के कारण भारतीय समाज दुर्दशा के कगार पर खड़ी हो गई।

नवजागरण के दौर में भारतीय समाज सुधारकों एवं चिंतकों जैसे दादा भाई नौरोजी, राजा राममोहन राय, लाजपत राय, ईश्वरचंद विद्यासागर आदि ने इस बात को शिद्दत से महसूस की और ब्रिटिश शोषणकारी नीतियों के प्रति जनता को जागरूक किया। यही कारण है कि 1905 के बंगाल विभाजन के बाद भारतीयों ने स्वदेशी आंदोलन और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार पर बल दिया। ये कार्य भारत को आत्मनिर्भर बनाने एवं ब्रिटिश व्यवस्था को कमजोर करने के लिए किए गए थे। अतः आज जब भारत आत्मनिर्भर बनने का स्वप्न देख रहा है या यूँ कहें आत्मनिर्भर के पथ की ओर अग्रसर हैं तो प्रशासनिक व्यवस्था में सत्यनिष्ठा पर भी बल दिया जा रहा है। यही कारण है Ease of Doing Business Ranking में भारत की स्थिति बेहतर होती जा रही है।

एक मूल्य के तौर पर सत्यनिष्ठा के विकास के लिए जागरूकता के साथ एक साफ और निष्पक्ष माहौल की भी दरकार होती है। जिसके द्वारा सत्यनिष्ठा और प्रशासनिक व्यवस्था के सुधार में और इजाफा किया जा सकता है जिसे निम्नलिखित बिंदु अपेक्षित हैं –

1. व्यवस्थ्या का Digitalization कर भ्रष्टाचार एवं प्रशासनिक कार्यकुशलता को बढ़ाया जा सकता है।
2. जन–धन, आधार और मोबाईल (JAM) ने सरकारी योजनाओं का लाभार्थी तक प्रत्यक्ष पहुंच में मदद की है।
3. सूचना के अधिकार के दायरे को विस्तृत करके अधिक से अधिक सार्वजनिक कार्यालयों की पारदर्शिता को बढ़ाया गया है।
4. केंद्रीय सतर्कता आयोग जैसे संस्थानों की स्थापना एवं उनके कार्यक्षेत्र के विस्तार ने प्रशासनिक कार्यालयों एवं अधिकारियों को सत्यनिष्ठा की ओर प्रेरित किया है।

5. जनलोकपाल जैसे पदों के सृजन से प्रशासनिक के साथ–साथ राजनैतिक पदों की जवाबदेही बढ़ी है।

6. मुखवीर सूचना नीति (Whistel Blower Policy) जैसी कार्यवाहियों ने भी इस प्रक्रिया को प्रभावी बनाया है।

7. वर्तमान सरकार द्वारा Production Linked Subsidy, Make in India, Export Merchandise of India के द्वारा निर्यात को बढ़ावा दिया जा रहा है। साथ ही, national infrastructure pipeline, Mission Karmyogi, Skill India Mission, और MSMEs के दायरे को बढ़ाकर आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाया है। कहना न होगा यह वर्तमान सरकार की भारत राष्ट्र के प्रति सत्यनिष्ठा और देशभक्ति के कारण संभव हो पा रहा है।

इस प्रकार, उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर स्पष्ट है कि सत्यनिष्ठा एवं बेहतर प्रशासनिक व्यवस्था ही भारत को आत्मनिर्भर बना सकती है। इसके लिए लोगों को जागरूक एवं सतर्क रहने की आवश्यकता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। अपने देश और समाज के प्रति निष्ठा होने के कारण ही आज भारत ओलंपिक जैसे खेलों में बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। भारत में व्यापार की बेहतर परिस्थितियां बन रही है। कोरोना जैसी महामारी आने के बाद भी आज भारत जिस तरह मॉस्क और सेनेटाइजर, वैक्सीन और दवाईयों के क्षेत्र में न सिर्फ आत्मनिर्भर हुआ बल्कि अन्य देशों की सहायता भी कर पाया तो ये हमारे वैज्ञानिकों, चिकित्यों, सफाई कर्मचारियों आदि की सत्यनिष्ठा के कारण ही संभव हो पाया है। अतः भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दृष्टि से अपने देश के लोगों का सत्यनिष्ठ होना अपेक्षित है।

''अब हमारा एक ही सपना
सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भर भारत हो अपना''

★★★★★★★★★★★

आज़ादी का अमृत महोत्सव

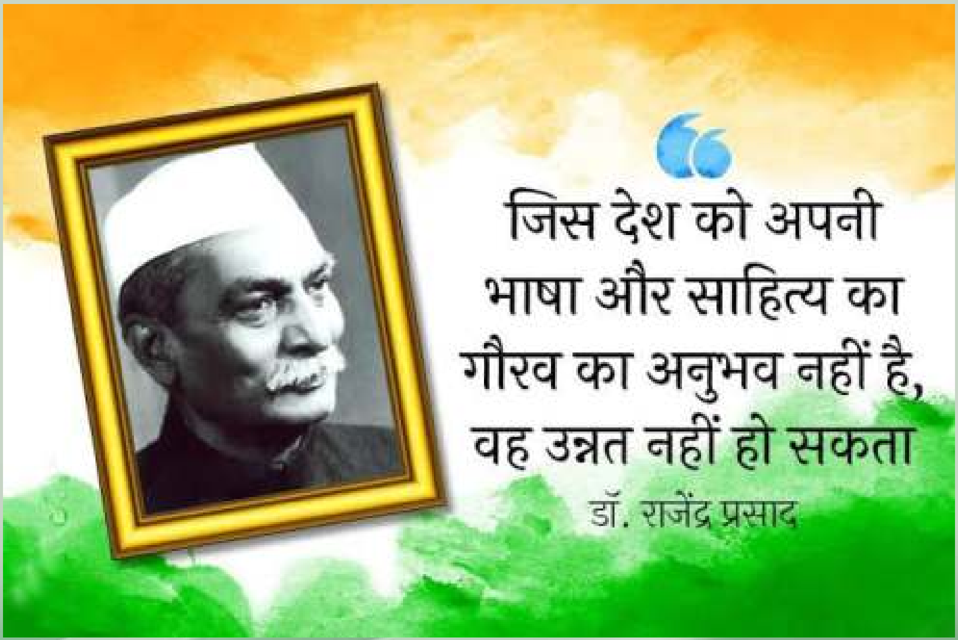

सफलता की कहानी

श्रीमती प्रीति मेहरा पत्नी श्री प्यारे लाल, राजस्थान के अलवर जिले की रहने वाली हैं। वह अपने पति के साथ लघु डेयरी का कारोबार कर रही थीं। वह प्रति माह लगभग 7,000 रुपये का लाभ कमाती थी। हालाँकि, इससे वह ज्यादा कमाने में सक्षम नहीं थी और परिवार के खर्चों को पूरा करने में कठिनाई का सामना कर रही थी। ऐसे में वह अपने कारोबार का विस्तार करना चाहती थी। इसलिए, उन्होंने और भैंसें खरीदने का फैसला किया। लेकिन, उनके पास निवेश करने के लिए पर्याप्त पैसा नहीं था और वह इस उद्देश्य के लिए ऋण लेना चाहती थी। उन्हे अपने एक रिश्तेदार के माध्यम से एनएसएफडीसी की कम ब्याज वाली ऋण योजनाओं के बारे में पता चला।

उन्होंने एनएसएफडीसी की मियादी ऋण योजना के तहत ₹1.70 लाख रुपये की राशि के लिए अपने घर के पास स्थित ई–मित्र सुविधा के माध्यम से ऋण के लिए आवेदन किया और आवश्यक ऋण राशि प्राप्त करके प्रसन्न हुई ।

ऋण की राशि से वह तीन और भैंसें खरीद सकीं। वह अपने इलाके में इसी तरह की गतिविधि में लगे लोगों के साथ एक डेयरी बूथ स्थापित करने की भी योजना बना रही है। अब, वह प्रति माह लगभग ₹13,000 की आय अर्जित कर रही हैं। आय से वह समय पर ऋण चुकाने में सक्षम है। श्रीमती प्रीति मेहरा अब खुश हैं और समय पर मदद के लिए एनएसएफडीसी की शुक्रगुजार हैं।

जीवन के मौसम

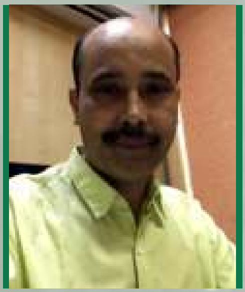

श्री सपन बरुआ,
उप महाप्रबंधक
(परि. डेस्क. पूर्वी क्षेत्र)

एकांत में मुझे कभी–कभी वो दिन याद आते हैं जब मैं एक बच्चा था
और मेरी माँ ही मेरी दुनिया थी।

लेकिन जैसे–जैसे समय का पहिया आगे बढ़ा,
मेरा सामना दुनिया की सभी अनिश्चितताओं से हुआ।

मैं दुनिया का सामना करते हुए बड़ा हुआ
तो मुझे माँ के बिना शर्त प्यार की याद आई।

मैं कई बार लड़खड़ाया, फिर अपनी नई जिम्मेदारियों को संभालने के लिए उठ खड़ा हुआ,
कभी खुश तो कभी उदास, मुझे एहसास हुआ कि मैं जीवन के मौसम का सामना कर रहा हूं,
और अगर वसंत है, तो सर्दी भी आनी ही है
और हमें इन दोनों को आनंद और उल्लास के साथ स्वागत करना है।

★★★★★★★★★★

पीएम-दक्ष योजना : एक परिचय

रतिकांत जेना
उप महाप्रबंधक
(कौशल प्रशिक्षण)

1. **योजनाः**

प्रधान मंत्री दक्षता और कुशलता संपन्न हितग्राही (पीएम–दक्ष) योजना, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार, की एक केंद्रीय क्षेत्रक योजना है ।

2. **योजना का उद्देश्य :**

रोजगारोन्मुखी (Job oriented) कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से लक्ष्य समूहों को कुशल बनाकर उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार करना।

3. **लक्ष्य समूह और उनकी आयु :**

➢ अनुसूचित जाति के व्यक्ति। (कोई आय मानदंड नहीं)

➢ रु. 3.00 लाख तक वार्षिक पारिवारिक आय वाले अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के व्यक्ति ।

➢ रु.1.00 लाख तक की वार्षिक पारिवारिक आय वाले आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग (ईबीसी) के व्यक्ति ।

➢ गैर–अधिसूचित, घुमंतू और अर्ध–घुमंतू जनजाति के व्यक्ति। (कोई आय मानदंड नहीं)

➢ कचरा बीनने वालों और उनके आश्रितों सहित सफाई कर्मचारी ।

➢ आयु: 18–45 वर्ष।

4. **प्रशिक्षण कार्यक्रमों के घटक / प्रकारः**

(क) अप–स्किलिंग / री–स्किलिंग / पूर्व प्रशिक्षण की मान्यता (RPL) जिसकी अवधि सामान्यतः 35 से 60 घंटे / 35 दिनों की है ।

(ख) अल्पावधि कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम जो सामान्यतः 300 घंटे / 3 महीने की अवधि के है।

(ग) उद्यमिता विकास कार्यक्रम (ईडीपी) जिनकी अवधि 90 घंटे / 15 दिनों की है।

(घ) दीर्घावधि कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम जिनकी अवधि सामान्यत 650 घंटे / 7 महीने की है।

लक्ष्य समूह को विभिन्न रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है जैसे मशीन ऑपरेटर – प्लास्टिक प्रोसेसिंग, मशीन ऑपरेटर – ब्लो मोल्डिंग, मशीन ऑपरेटर असिस्टेंट – इंजेक्शन मोल्डिंग, फैशन डिजाइनर, सेल्फ एम्प्लॉयड टेलर, ब्यूटी थेरेपिस्ट, फ्लेबोटोमिस्ट, जेरियाट्रिक केयरगीवर, जनरल ड्यूटी असिस्टेंट, प्रोडक्शन सुपरवाइजर सिलाई, फील्ड टेक्निशियन कंप्यूटिंग एंड पेरिफेरल्स, सर्टिफिकेट सीएनसी टर्निंग एंड मिलिंग में कोर्स ,

ऑटोमोटिव स्पेयर पार्ट्स ऑपरेशंस असिस्टेंट, रिटेल सेल्स एसोसिएट, सीएनसी टेक्नोलॉजी में मास्टर सर्टिफिकेट कोर्स, ऑटोकैड, आदि। प्रशिक्षण के सफलतापूर्वक समाप्ति के बाद, प्रशिक्षुओं को रोजगार/स्वरोजगार प्राप्त करने के लिए सहायता प्रदान की जाती है ।

5. **प्रशिक्षण लागत :**

- **प्रशिक्षण :** लक्ष्य समूह के व्यक्तियों को कौशल प्रशिक्षण, मूल्यांकन और प्रमाणन, आवास और भोजन लागत के लिए 100% अनुदान प्रदान किया जाता है । यह किमत कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा समय–समय पर जारी किए गए सामान्य मानदंड (कॉमन नॉर्म्स) के अुनसार है।

- **स्टाइपेंड :** अल्पावधि और दीर्घावधि प्रशिक्षण के अंतर्गत 80% और उससे अधिक उपस्थिति वाले प्रशिक्षुओं को प्रति माह रु.1,000/– (ओबीसी) और रु.1,500/– (अनुसूचित जाति और कचरा बीनने वालों और उनके आश्रितों सहित सफाई कर्मचारी) प्रति प्रशिक्षु की दर से स्टाइपेंड दिया जाता है।

- री–स्किलिंग/अप–स्किलिंग के अंतर्गत 80% और उससे अधिक उपस्थिति वाले प्रशिक्षुओं को प्रति माह रु.3000 (रु.2500/– पीएम–दक्ष योजना के अनुसार और 500/– रुपए सामान्य लागत मानदंडों के अनुसार) की दर से वेतन मुआवजा दिया जाता है ।

- ईडीपी के अंतर्गत जलपान एवं आने–जाने के व्यय हेतु प्रति प्रशिक्षु प्रति दिन रु.100/– दिया जाता है ।

- प्रशिक्षण के बाद पात्र प्रशिक्षुओं को प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) के माध्यम से स्टाइपेंड और वेतन मुआवजा दिया जाता है।

6. **कार्यान्वयन एजेंसियां :**

यह योजना सामाजिक न्याय और अधिकारित मंत्रालय के तीन शीर्ष निगमों, अर्थात् NSFDC, NBCFDC और NSKFDC द्वारा प्रशिक्षण संस्थानों के माध्यम से कार्यान्वित की जा रही है। जिसमें प्रशिक्षण संस्थानों जैसे– MSMEs, CIPET, ATDC, NIESBUD आदि का चयन सामाजिक न्याय और अधिकारित मंत्रालय द्वारा किया गया है।

7. **पीएम–दक्ष पोर्टल और मोबाइल ऐप :**

योजना के अंतर्गत कौशल प्रशिक्षण के कार्यान्वयन के लिए, एक समर्पित पोर्टल–पीएम–दक्ष (https://pmdaksh.dosje.gov.in/) कार्य कर रहा है और "PMDAKSH" मोबाइल ऐप भी बनाया गया है जिसे गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है।

पोर्टल उम्मीदवारों के पंजीकरण, प्रशिक्षण संस्थानों के पंजीकरण, उम्मीदवारों के चयन, प्रशिक्षुओं की उपस्थिति दर्ज करने और प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा दावों को शीर्ष निगमों को प्रस्तुत करने आदि की सुविधा प्रदान करता है।

8. **प्रशिक्षित उम्मीदवारों को रोजगार :**

कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय द्वारा जारी सामान्य मानदंडों के अनुसार, प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा प्रशिक्षित उम्मीदवारों (कम से कम 70% प्रशिक्षित उम्मीदवारों) को रोजगार (वैतनिक/स्वरोजगार) प्रदान करना आवश्यक है।

★★★★★★★★★★

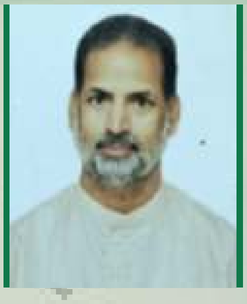

स्वस्थ रहने के मूलभूत उपाय

डॉ. सत्येन्द्र सिंह
संस्थापक उत्कर्ष योग मिशन
पूर्व सचिव, तीसरी उप समिति,
संसदीय राजभाषा समिति

इस संसार में प्रत्येक जीव जीने के लिए आता हैं। जमीन पर रेंगने वाले, जमीन पर चलने वाले, जमीन के नीचे रहने वाले, पानी में रहने वाले, आसमान में उडने वाले, सभी जीव अपने जीवन को सुख पूर्वक जीना चाहता हैं।

मनुष्य के अलावा सभी जीवों को उनके जीवनयापन का तरीका पता होता है और यह प्राकृतिक है । मनुष्य तंदुरूस्त रहना चाहता हैं, लेकिन मनुष्य को तंदुरूस्त रहने के सामान्य नियमों का पता नहीं होता है। इसका परिणाम यह होता है कि वह अपने स्वास्थ्य को स्वयं बिगाड़ने लगता है। अस्वस्थ होने पर डॉक्टरों, अस्पतालों के चक्कर काटता रहता है। सेहत अलग बिगड़ती है। पैसा, समय और ऊर्जा की बरबादी अलग होती है।

बचपन में पढ़ाया जाता है, शरीर के बारे में शरीर के अंगों के बारे में, संतुलित भोजन के बारे में, व्यायाम के बारे में, खेल के बारे में,। हम उसे पढ़ते तो हैं परन्तु सुनते नहीं हैं। चुन नहीं पाते, इसलिए चुन नहीं पाते कि कैसे खाना पकाएं, कैसे शुद्ध हवा पानी का सेवन करें, कैसे सफाई का ध्यान रखें? कैसे प्रकृति के नियमों का पालन करें ? अपने शरीर को कैसे दवाइयों का भण्डार न बनाकर उसे सुख का खजाना बनाएं ?

जिस तरह से हम कोई उपकरण मशीन, यंत्र और वस्तु खरीदते है तो उसकी कीमत चुकाते हैं। कीमत चुकाते हैं तो उसका विशेष ध्यान भी रखते है ।

इसी प्रकार हमारा यह शरीर भी ऐसी मशीन है जो बहुत मूल्यवान है, सुंदर है सजीवन है, सूक्ष्म और शक्तिशाली है। इस मशीन को प्रकृत्ति कहिए कि ईश्वर द्वारा दी गई एक अद्भुत मशीन। इस मशीन से ही हमारा जीवन चल पाता है। इस मशीन में रीढ़ की हड्डी है, जो बाएँ–दाएँ मुड़ने आगे पीछे झुकने में हमारी मदद करती है। जिसकी वजह से हम सीधे खड़े हो पाते है, जो हमे उठने बैठने सोने में मदद करती है। इसी तरह अन्य अंग हैं जो पूरे जीवन को चलाते हैं। फेफड़े, हृदय हैं, जो अशुद्ध रक्त को शुद्ध करके 24 घंटे पूरे शरीर को देते है ।

किडनियां हैं, जो शरीर में फिल्टर और सफाई का काम करती है, आदि आदि। शरीर इन सभी अंगों के स्वस्थ होने पर इनकी कीमत बहुत अधिक बढ़ जाती है। या कह सकते हैं कि स्वस्थ शरीर अनमोल है ।

दूसरी ओर यह भी सत्य है कि हम इसकी कीमत या मूल्य तब ज्यादा समझते हैं जब हमें अपनी लापरवाही नादानी में इनका सही प्रबंधन नहीं कर पाते, इनका सही देख–रेख नहीं कर पाते। हम इनकी सुरक्षा नहीं कर पाते। हम सही तरीके से विश्राम नहीं कर पाते तो ये सबसे पहले हमारे मन पर प्रभाव डालते है। मन से हमारे, दिमाग पर नकारात्मक प्रभाव डालना शुरू कर देते हैं । हमारी छोटी –छोटी गलतियां फिर हमें मंहगी पड़ती है। गलतियों के पता न लगने के दो कारण होते हैं । एक तो हमें उनका लेखा–झोखा नहीं मिलता । दूसरे, प्रकृति हमारी भूलों को माफ करती रहती है । मशीन में जरा सी गलती होने पर मशीन रूक जाती है काम करना बंद कर देती हैं। परन्तु यहॉ बताना यह समीचीन है कि शरीर में स्वतः ऐसी प्रकृतिक व्यवस्था है कि प्रकृति यथा संभव गलतियों में सुधार करती रहती है। हमें इनका पता तब लगता है जब बहुत अधिक देर हो चुकी होती हैं।

पशु पक्षियों के कटने पर घाव को चाटकर स्वयं उसे ठीक कर लेते हैं। कुत्ता अपच होने पर घास खा कर उल्टी करता है और ठीक हो जाता है। जंगल में जंगली जानवर बीमार होने पर जड़ी बूटियां खा स्वयं को ठीक कर लेते हैं। यह सब कुछ प्राकृतिक होता हैं ।

कहा गया हैं कि ″पहला सुख निरोगी काया″ Health is wealth ″स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ दिमाग निवास करता हैं। ″Healthy body Healthy mind″ यदि हम स्वस्थ नहीं हैं। तो भोजन का आनंद नहीं ले सकते, धन संपत्ति का, परिवार का साधनों या कला साहित्य संपत्ति आदि किसी भी चीज का भी आनंद नहीं ले सकते। जिस तरह से मकान की मजबूती उसकी बुनियाद में, पेड़ की मजबूती उसकी जड़ में होती है उसी प्रकार जीवन की सार्थकता उसके स्वस्थ रहने में है। अस्वस्थ रहना इसी प्रकार है जैसे सुन्दर फूल है परन्तु उसमे सुगन्ध नहीं है। चॉद है पर उसमें शीतलता नहीं है सरोवर है और उसमें जल नहीं है । स्वास्थ्य के बिना सब कुछ बेकार है ।

″शरीमांद्य खलु धर्म साधनम ″वास्तव में शरीर ही धर्म साधना का मूल हैं।
कोई भी बड़ा–छोटा कार्य अस्वस्थ होकर पूरा नहीं किया जा सकता है।

चाहे वह नौकरी हो घर का काम हो कारोबार व्यापार हो, मजदूरी खेती बाड़ी हो। सभी के लिए स्वस्थ शरीर होना आवश्यक हैं। इसके स्वस्थ होने पर हमारा बौद्धिक विकास हो पाता है। तंदुरुस्त व्यक्ति के लिए जीवन एक स्वर्ग हैं। बीमार व्यक्ति के लिए घोर नरक है। इसलिए समय रहते ही कुछ बातें है जिनका ध्यान रखा जाएगा तो पूर्णरूप से स्वास्थ्य लाभ उठाया जा सकता है, हम बलिष्ठ हो सकते हैं तथा दीर्घजीवी हो सकते हैं ।

मूलभूत बातेः व्यायाम, कसरत, आसन, अच्छी गहरी नींद, संतुलित भोजन, उपवास नशीलें पदार्थों को त्याग करना प्रकृति हमारे शरीर में छोटी मोटी टूटफूट होती है जरूरत पड़ने पर नए का निर्माण करती है ।

भोजन संतुलित हो – उसमें विटामिन, मिनरल, कार्बोहाइड्रेड, कैल्शियम तथा अन्य आवश्यक तत्वों की पूर्ति होती हैं।

6 से 8 घंटे की गहरी नींद हो। रोज प्रातः सूर्य निकलने से पहले व्यायाम, कसरत, आसन, प्रणायाम हो । शरीर का जो अंग सक्रिय नहीं रहता है अर्थात हिलता– डुलता नही है, वह धीरे–धीरे बेकार होने लगता है । प्रकृति ने हमारी हड्डियों तथा अंगों को कार्य करने की अदभुत शक्ति प्रदान की है । यदि इनसे नियमित रूप से काम नहीं लिया जाए तो ये काम करना बंद कर देती हैं ।

नियमित व्यायाम आसन– Morning walk is good exercise सभी आयु वर्ग के लोगों को चाहे वे बच्चे हों, नौजवान हो, वृद्ध हों, सभी को कुछ न कुछ व्यायाम अवश्य करने चाहिए। व्यायाम शुद्ध वातावरण पेड़–पौधों के बीच, नदी तट, समुंद्र तट आदि पर किया जाए तो अधिक लाभ देता है । मुंह से सांसें न लें । नाक से सांस लेने से धूल मिट्टी तथा अन्य विजातीय पदार्थ नाक की झिल्ली के कोने से अंदर नही जा पाते। व्यायाम व आसन ऐसे किए जाएं ताकि शरीर के सभी अंगों को समान रूप से इसका लाभ मिल सके ।

तैरना, दौड़ना तथा खेल आदि ऐसे व्यायाम हैं, जिनसे शरीर का समुचित रूप से विकास होता है । सुबह–शाम नियमित रूप से टहलना भी लाभदायक होता है । इससे मनुष्य फुर्तिला, शक्तिवान एवं ताकतवर बना रहता हैं ।

सूर्यनमस्कार के 12 आसनों से सारे शरीर का व्यायाम हो जाता हैं। इसमें दो बार हस्तोतान आसन होता है दो बार पाद हस्त आसन, दो बार अश्व संचालन और दो बार पर्वत आसन होता है। एक बार भुजंग आसन एक बार षाष्टांग आसन होता है। हस्तोतान आसन से दोनों हाथ धड़ का, पाद्धहस्न आसन से हाथों दोनों पैरों, कमर, घुटनों तक पेर की मालिश एवं खिचाव होता है। अश्व संचालन आसन से दोनों भुजाओं, कमर, तथा धड़ में लचीलापन एवं ताकत आती हैं। पर्वतआसन से कमर भुजाओं तथा पैरों में लचीलापन व फुर्ती आ जाती हैं। भुजग आसन से कमर दर्द सियाटिका सर्रवाइकल स्पोंडलाईटिस तथा स्लिप डिस्क जैसे रोगों में मदद मिलती हैं ।

सूर्यनमस्कार के दो बार नमस्कार मुद्रा से अनाहत चक्र हस्तोतान आसन से विशुद्धि चक्र पाद्धहस्न आसन से स्वाधिष्ठान

चक्र अश्वसंचालन आसन से आज्ञाचक्र प्रर्वतआसन से विशुद्धि चक्र साष्टांग आसन से मणिद्रर चक्र भुजंग आसन से स्वाधिष्ठान चक्रों की सक्रियता बढ़ती है तथा चक्र उस हिस्से के बिजातीय तत्वों को दूर करने में मदद करते हैं। अतः सूर्य नमस्कार एक Complete Exercise Package हैं, जो सारे अंगों को सक्रिय एवं सामवर्धक बना देता हैं। सूर्य नमस्कार को किसी मजहब धर्म से ऊपर उठकर देखा जाना चाहिए शक्ति बढ़ती है गुर्दे लीवर आदि ठीक काम करते है इनके ठीक रहने से जीवन में आनंद रहता है। इसके माध्यम से एक ही स्थान पर संपूर्ण शरीर की कसरत हो जाती हैं ।

आसन की स्थिति में हम एक बार श्वास लेने में 480 घन इंच ताजी हवा अपने फेफडों में खींचते हैं। तेज चलने पर 1550 घन इंच, दौड़ने, प्राणायाम करने पर 3250 घन इंच ताजी श्वास हम खींचते हैं। आसनों और प्राणायाम से यह आक्सीजन लेवल सदैव ऊंचा रहता हैं। आसन/ आसनों से शरीर से पसीना निकलता है जिससे शरीर के विजातीय तत्व बाहर निकलते रहते हैं । आसन व्यायाम से पाचन तंत्र, निष्ठवासन तंत्र, रक्त संरचरणतंत्र, ढाचागत शरीर, स्वायु तंत्र एवं तांत्रिक तंत्र ठीक रहते हैं।

गहरी नींद न आने से हमारी शक्ति घटती रहती हैं। खोई हुई शक्ति को वापिस पाने के लिए अच्छा विश्राम और गहरी नींद जरूरी हैं। अच्छी नींद आने से शरीर आवश्यक शक्ति प्राप्त कर लेता है। इससे नष्ट रक्त कोशिकाओं की या तो मरम्मत हो जाती है या उनका फिर से निर्माण हो जाता है।

आयुवर्ग	**नींद**
1 से 4 वर्ष तक आयु वाले के लिए	16 घंटे
4 से 12 वर्ष तक	12 घंटे
12 से 16 वर्ष तक	10 घंटे
16 से ऊपर	5–6 घंटे

सोने का कमरा साफ सुथरा हवादार हो तो ज्यादा अच्छा हैं । सोने का समय ऐसा हो कि हम सूर्य निकलने से पहले अवश्य जाग जाएं । जल्दी उठने के लिए जल्दी सोना, जल्दी सोने के लिए जल्दी समय पर खाना खाना, समय पर खाने के लिये उसे समय पर तैयार करना जरूरी हैं। इन सब बातों के लिए एक अनुशासन तथा सामाजिक अनुशासन जरूरी है। स्व–अनुशासन तथा सामाजिक अनुशासन सच्ची लगन, निष्ठा एवं सरलता से आता हैं ।

★★★★★★★★★★

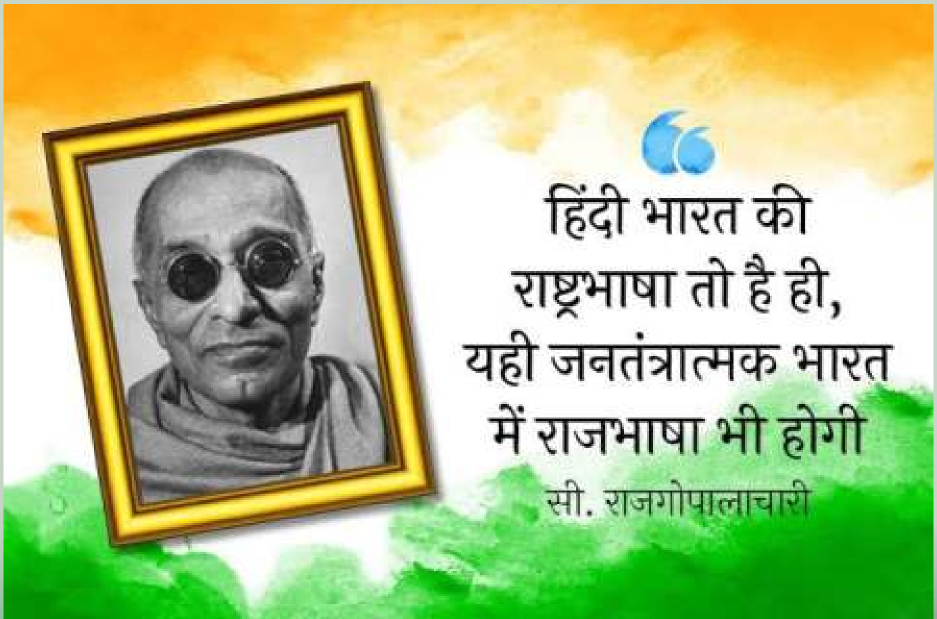

भारत सरकार की अग्निपथ योजना

सुभाष चंद चौहान
सहायक महाप्रबंधक (सेवानिवृत्त)
(अप्रनि कार्यालय)

अग्निपथ योजना सशस्त्र बलों की तीन सेवाओं में कमीशन अधिकारियों के पद से नीचे के सैनिकों की भर्ती के लिए भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक नई योजना है। इसकी घोषणा 16 जून 2022 को की गई थी। इस योजना के तहत सेना में शामिल होने वाले जवानों को 'अग्निवीर' के नाम से जाना जाएगा।

मुख्य योग्यता अथवा मापदंड

केंद्र सरकार के द्वारा हाल ही में अग्निपथ योजना के लिए भर्ती शुरू कर दी गयी है। अग्निपथ योजना के तहत सेना का हिस्सा बनने के लिए योग्यताएं इस प्रकार निर्धारित की गयी हैं:

- अग्निपथ के लिए 17.5 साल से 23 साल के बीच के उम्मीदवार आवेदन कर सकते हैं। हालांकि असल में अग्निपथ स्कीम के तहत सेना का हिस्सा बनने के लिए सरकार द्वारा निर्धारित तय आयु सीमा 17.5 साल से 21 वर्ष की है परंतु कोरोना महामारी के कारण पिछले 2 वर्षों से रुकी हुई भर्ती के कारण अधिक से अधिक युवाओं को मौका देने के लिए केवल पहले साल की भर्ती में ही उम्र सीमा में 2 साल की छूट दी गयी है।
- आवेदन करने वाले युवा कम से कम 50 प्रतिशत नंबरों के साथ 12वीं पास होने चाहिए।
- आवेदन करने वाले युवाओं का शारीरिक क्षमता व मापदंड सेना के अनुसार होना चाहिए।
- भर्ती होने वाले युवाओं को छह महीने तक ट्रेनिंग दी जाएगी. इसके बाद 3.5 साल तक सेना में सर्विस देनी होगी।

अग्निपथ स्कीम की मुख्य विशेषताएं

अग्निपथ स्कीम की विशेषताएं कुछ इस प्रकार हैं:

- मेरिट के आधार पर देश भर से युवा इस योजना में शामिल होकर इसका हिस्सा बन सकते हैं।
- इसमे जातीय या धार्मिक आरक्षण का प्रावधान नहीं किया गया है।
- इस योजना के माध्यम से भर्ती होने वाले सेना के जवान को अग्निवीर के नाम से जाना जाएगा।
- चार वर्ष की सेवा के पश्चात 25 प्रतिशत अग्निवीरों को उनकी कौशलता के आधार पर सेना में स्थाई किया जाएगा।
- स्थाई कैडर का हिस्सा बन जाने के पश्चात अग्निवीरों को बाकी जवानों की ही तरह पेंशन और अन्य सुविधाएं मिलेंगी।
- सेवा समाप्ति के पश्चात अग्निवीरों को उनकी कौशलता के अनुरूप स्किल सर्टिफिकेट भी दिया जाएगा जो भविष्य में उनके लिए अन्य क्षेत्रों में रोजगार के रास्ते खोलेगा।

- रक्षा मंत्रालय, गृह मंग्रालाय और विभिन्न राज्यों द्वारा उनकी बहाली प्रक्रिया जैसे केंद्रीय बल, राज्य पुलिस बल, सरकारी उपक्रम, इत्यादि में अग्निवीरों को तरजीह दी जाएगी।

- सेवा के दौरान किसी प्रकार की अनहोनी होने की अवस्था को मद्देनजर अग्निवीरों का पर्याप्त बीमा होगा।

- अग्निपथ स्कीम के तहत सेना के जवान अर्थात अग्निवीरों को भी उत्त्कृष्ट प्रदर्शन के एवज में गैलेंट्री अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा।

सैलरी और तैनाती

योजना के तहत शुरुआती वेतन 30,000 रुपये दिया जाएगा जो कि सर्विस के चौथे साल तक बढ़कर 40 हजार रुपये तक हो जाएगा। सेवा निधि योजना के तहत सरकार वेतन का 30 प्रतिशत हिस्सा सेविंग के रूप में रख लेगी तथा साथ ही इसमें वह भी इतना ही योगदान करेगी। चार साल बाद सैनिकों को 10 लाख से 12 लाख रुपये मिलेंगे। ये पैसा टैक्स फ्री होगा। योजना के तहत भर्ती होने वाले युवाओं को कश्मीर और देश के अलग–अलग हिस्सों में तैनात किया जाएगा।

Year	Total Monthly Salary	In Hand	Agniveer Corpus Fund Contributions (30% of Salary)	Govt Corpus Fund Contributions
First Year	30000	21000	9000	9000
Second Year	33000	23100	9900	9900
Third Year	36500	25500	10950	10950
Fourth Year	40000	28000	12000	12000
Total Contribution			5.02 Lakhs	5.02 Lakhs

अग्निवीर द्वारा चार वर्षों की सेवा समाप्ति के बाद 25 प्रतिशत अग्निवीर, जो सेना में स्थाई सदस्य बनेंगे, उन्हें सेवा निधि से केवल उनके द्वारा जमा की गई राशि ही प्राप्त होगी और अन्य स्थायी सैनिकों की भांति पेंशन और भत्तों के हकदार होंगे। इसके इतर बाकी बचे हुए 75% अग्निवीर जो 4 साल की सेवा समाप्ति के पश्चात सेना में स्थायी नहीं हो पाएंगे, उन्हें उनकी मासिक सैलरी के अलावा सेवा निधि के तहत लगभग 10.04 लाख रूपए ब्याज सहित प्राप्त होंगे। जिसका इस्तेमाल पढाई, व्यवसाय या अन्य कार्यों में अग्निवीर कर पाएँगे।

भर्ती होने वाले युवाओं को वैसे ही प्रशिक्षण दिया जाएगा जिस प्रकार सेना में सैनिकों को दिया जाता है और फिर अलग–अलग फील्ड / विंग में उनको तैनात किया जाएगा।

नोटः अग्निपथ योजना से संबन्धित उपरोक्त लेख मे विदित सभी सूचना मुख्यतः विभिन्न सांकेतिक स्रोतों से एकत्रित कर संकलित की गई है। अतः तथ्यात्मक दृष्टि से पाठकगण कृपया जांच लें।

★★★★★★★★★★

'रुकावटें छोटी सी...'

श्रीमती अन्नु भोगल
उप महाप्रबंधक
(कंपनी सचिव/राजभाषा)

जीवन में हमें अक्सर छोटे–छोटे कष्टप्रद या झुंझलाने वाले अनुभव होते हैं। ऐसे अनुभवों का उद्देश्य क्या है? क्या ऐसे अनुभव हमारे शिक्षक नहीं हैं?

वर्ल्ड ट्रेड सेंटर, न्यूयॉर्क में 11 सितंबर के हमले के बाद, एक कंपनी ने उन कंपनियों के सदस्यों को अपना अनुभव साझा करने के लिए आमंत्रित किया, जो ट्विन टावर्स पर हमले के दौरान बच गए थे।

उन सभी कर्मचारियों के साथ बातचीत के बाद जो कि हमले से बच गए थे, एक कंपनी के प्रमुख ने बताना प्रारंभ किया कि ऐसा उन सब के साथ क्या हुआ था कि जिस कारण से वे सभी आज जीवित हैं...... और उन सभी बातों में वह छोटी–छोटी चीजें थी जिन्हें हम में से अधिकांश लोग अनदेखा कर देते हैं या जो हमारे लिए कोई मायने नहीं रखती:–

कंपनी के मुखिया उस दिन इसलिए बच गये थे क्योंकि उनके बेटे ने पहली बार स्कूल जाना शुरू किया था और वे उसे स्कूल छोड़ने गए थे।

एक कर्मचारी इसलिए जीवित बच गया था क्योंकि उस दिन डोनट्स लाने की उसकी बारी थी और वह डोनट्स लेने चला गया था।

एक महिला को दफ्तर पहुँचने में देर हो गई थी क्योंकि उसकी अलार्म घड़ी समय पर नहीं बजी।

उनमें से एक की बस छूट गई थी।

एक ने अपने कपड़ों पर खाना गिरा दिया था और कपड़े बदलने में उसे समय लग गया था।

किसी की कार स्टार्ट नहीं हुई थी।

कोई फोन पर बात करने लगा था इस लिए उसे देरी हो गई थी।

एक का बच्चा स्कूल जाने के लिए समय पर तैयार नहीं हो रहा था इसलिए उसे देरी हो गई थी।

किसी को टैक्सी नहीं मिली।

किसी के नए जूते होने के कारण पैर में छाला हो गया था और वह दवा की दुकान पर पट्टी खरीदने के लिए रुक गया था। इसलिए वह आज जिंदा हैं।

अब जब मैं ट्रैफिक में फँस जाता हूँ, समय पर लिफ्ट नहीं मिलती है, बजते हुए टेलीफोन का जवाब देने के लिये रुकना पड़ता है... ऐसी सभी छोटी–छोटी चीजें जो मुझे परेशान करती हैं... मैं अपने आप में सोचता हूँ, यही वह जगह है, जहाँ ईश्वर मुझे कुछ क्षण के लिए रोकना चाहता हैं।

अगली बार जब...

हमें लगे कि सुबह से सब गलत हो रहा हैं,

बच्चे धीरे–धीरे तैयार हो रहे हैं,

हमारी कार की चाबियाँ नहीं मिल रही हैं,

हम हर ट्रैफिक लाइट में रुक रहे हैं,

नाराज, हताश या निराश न हों।

बस याद रखें कि ईश्वर हमें हर पल देख रहा है कि हम उन सभी चीजों को कैसे लेते हैं या कैसे प्रतिक्रिया करते हैं?

जब ईश्वर हमें वह छोटी–छोटी चीजें भेजते हैं जो हमें परेशान करती हैं तो क्या हम इसके पीछे ईश्वर के उद्देश्य के बारे में सोचते हैं...

छोटी–छोटी–सी रुकावटें, वे गति अवरोधक है जो जीवन को बड़े लक्ष्यों की ओर मोड़ने ले लिए तैयार करती है।

हमारा विवेक कहता है, "हमेशा सच्चे रहें। ईश्वर की तरफ से आने वाले दुखों/परेशानियों को यह समझ कर स्वीकार करे कि वे हमारे अच्छे के लिए ही है और इस अवसर के लिए ईश्वर को धन्यवाद दें।"

"यदि हमारा कोई अनुभव हमारे अंदर बदलाव नहीं लाता है, तो क्या इसका वास्तव में कोई मूल्य है ? हमारा अनुभव हमेशा हमारे आंतरिक स्वभाव को दर्शाता हैं। वह हमें दिखाता हैं कि हम क्या हैं। इस तरह वह हमारे अंदर बदलाव लाने वाली प्रक्रिया के उपकरण हैं।"

स्वच्छता

आओ हम सब मिलकर,
अपना फर्ज निभाते हैं,
अपनी इस धरती को
मिलकर स्वच्छ बनाते हैं।

चंहू ओर हरियाली हो,
हर चेहरे पर लाली हो,
खुद को यह सौगात दिलाते हैं।

धूल और धुंए को,
इस धरती से दूर भगाते हैं,
निर्मल हवा और पानी से,
सबको रुबरु कराते हैं।

चहकती थी जो नन्हीं चिड़ियां,
पहले बाग–बगीचों में,
फिर से उसे बुलाते हैं।

उनका जन्म वरदान है,
इस धरती की गोद में,
हर बच्चे को यह विश्वास
दिलाते हैं।

आओ हम सब मिलकर,
अपना फर्ज निभाते हैं,
अपनी इस धरती को
मिलकर स्वच्छ बनाते हैं।

रजनी मोंगिया
प्रबंधक (मा.सं.)

★★★★★★★★★★★

मेरी लेह-लद्दाख यात्रा

राजेश बिहारी
मुख्य महाप्रबंधक

एक प्रसिद्ध दार्शनिक का कथन है– "दुनिया एक किताब है और जो यात्रा नही करते हैं वे केवल एक पन्ना पढ़ते हैं।" सच में, जीवन की परिपूर्णता के लिए यात्रा एक आवश्यक अंग है। जैसे जीवन की यात्रा हमें बहुत सिखाती है, वैसे ही विभिन्न स्थानों की यात्रा भी हमारे अंतर्मन को समृद्ध करती है। विभिन्न स्थानों के सामाजिक, आर्थिक व भगौलिक परिवेश और उनकी विविधताओं के दर्शन से हमारे मन में मानव तथा प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता बढ़ती है। विविधताओं में भी एकरूपता का दर्शन कराती है।

प्रकृति के दुर्गम क्षेत्रों की यात्राएं मन संकल्प को दृढ़ करने में सहायक होती हैं। यह एक साहसिक तथा रोमांचकारी अनुभव भी देता है। लेह– लद्दाख की दुर्गम पहाड़ियां, वहां का दुष्कर वातावरण, रोमांचकारी भी है और साथ ही साथ स्वर्गिक सुंदरता से भरपूर भी। और इन्हीं विशेषताओं के कारण मेरा भी मन लेह–लद्दाख की ओर खींचा चला आया।

अपने लेह–लद्दाख के पांच दिनों की यात्रा के दौरान जब मैं 14 सितंबर को कुशोक बकुल रिंपोचे हवाईअड्डा पर उतरा तो इसके तीन तरफ पहाड़ों तथा उसके नैसर्गिक छटा को निहारता ही रह गया। पहाड़ों पर पेड़ पौधे नहीं थे, कोई हरियाली नहीं थी शायद इसी कारण इसे कोल्ड डेजर्ट कहते हैं. लेकिन प्रकृति के इस रूप में एक अलग तरह का आकर्षण था, अनूठापन था। वहां पहाड़ की कुछ चोटियां सफेद बर्फ से ढकी दिखी। हवा सर्द थी और तेज बह रही थी। स्वच्छ नीला नभ बहुत आकर्षक था। सूरज की प्रभा बहुत तेज थी जो आखों में चुभ रही थी। हवा में ऑक्सीजन की कमी से सर थोड़ा घूमने लगा था।

अपनी यात्रा का पहला दिन होटल में पूरे विश्राम करके बिताया जिससे की शरीर वहां के वातावरण के साथ अपना तारतम्य बना सके।

दूसरे दिन, हमलोग महत्वपूर्ण स्थानीय जगहों के भ्रमण पर निकले। बौद्ध मठ – थिकसे मोनेस्ट्री, लेह पैलेस, गुरुद्वारा पत्थर साहिब आदि धार्मिक दर्शनीय स्थल महत्वपूर्ण हैं। थ्री इडियट फिल्म में रेंचो स्कूल आने के बाद यह स्थान टूरिस्ट आकर्षण का एक केंद्र बन गया है. मिलिट्री म्युज़ियम 'हॉल–ऑफ–फेम' देश की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले वीर सपूतों के रोमांचकारी घटनाओं से अवगत कराता है. यह बहुत ही प्रेरणादायक है और देशभक्ति की भावना से मन अभिभूत हो जाता है.

हिमालय के ग्लेशियरों से निकली कई नदियां लेह लद्दाख में बहती हुई आगे जाती हैं। सिंधु नदी भी अपने उद्गम तिब्बत के ग्लेशियर से निकलकर लेह में अपनी यात्रा करते हुए पाकिस्तान जाती है। लेह से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर सिंधु और जंस्कार नदी का संगम बहुत ही अभूतपूर्व है।

सिंधु नदी का जल थोड़ा हरा और जंस्कार नदी का थोड़ा सफेद मटमैला सा है. दोनों एक त्रिभुजीय पॉइंट पर मिलकर संगम बनाते है. यहां से दोनों साथ–साथ आगे बढ़ते हैं, लेकिन कुछ दूर बाद दोनो की जलधाराएं अलग अलग दिखने लगती है जैसे दो प्राणी साथ साथ मिलकर चल रहें हों, कुछ दूर सकुचाते हुए से, फिर उनके आपस का भेद मिट जाता है और वे एकाकार हो जाते हैं.

मैगनेटिक पॉइंट : सिंधु और जांस्कर के संगम के रास्ते में, चुंबकीय बिंदु एक आश्चर्यजनक जगह है। इस असर यह है कि कार न्यूट्रल में होने के बावजूद भी सड़क के ऊपरी चढान पर कुछ दूरी तक धीरे–धीरे आगे बढ़ता है। यहाँ सड़क के सामने एक विशाल काला पहाड़ है, शायद उसका ही कुछ आश्चर्यजनक चुंबकीय प्रभाव होता है।

तीसरे दिन प्रातः हमने पांच घंटे की नुब्रा घाटी के लिए अपनी यात्रा आरम्भ की. यहाँ पहुँचाने के लिए खुरदुंगला पास/ दर्रा के रास्ते से जाना पड़ता है। यह दुनिया की सबसे ऊंची मोटर–योग्य सड़क है जो लगभग 18,000 फुट की ऊंचाई पर है. सुबह 7 बजे जब लेह में तापमान 10 डिग्री सेलसियस था तब गूगल अनुसार खुरदुंगला पास में तापमान –3 डिग्री सेलसियस था । सड़क बहुत ही अच्छा था. पुरे रास्ते मोबाइल सिग्नल भी उपलब्ध था. चारों तरफ ऊँचें पर्वत, कुछ शिखर बर्फ से ढके हुए, बहुत मनोरम थे.

नुब्रा, या डुमरा, लेह जिले का एक उपखंड है जिसका अर्थ है "फूलों की घाटी"। इसकी औसत ऊंचाई समुद्र तल से 10,000 फीट से अधिक है। सियाचिन ग्लेशियर से निकलने वाली नुब्रा नदी, श्योक नदी की एक सहायक नदी है। श्योक नदी की भयंकरता के कारण इसे श्मौत की नदीश कहा जाता है। यह भारत में उत्तरी लद्दाख से होकर बहती है और पाकिस्तान में गिलगित–बाल्टिस्तान में प्रवेश करती है।

श्योक नदी के तट पर 14वीं सदी का बौद्ध डिस्कित मठ/गोम्पा तथा वहां पर स्थापित 33 मीटर ऊँची विशाल मैत्रीय बुद्धा मूर्ति आध्यात्मिक अनुभूति से अभिर्भूत कर देता है. प्रकृति के विशाल नीरव रूप पर मानव मन स्वतः नत–मस्तक हो जाता है। 'ॐ मणि पेम्बे होम' का बौद्ध मंत्र मेरे मन मस्तिष्क में गूंजने लगा और मैं कुछ देर के लिए ध्यान में खो गया ।

नुब्रा घाटी में ठहरने के लिए ऐसे तो कई होटल हैं, लेकिन डेसर्ट हिमालय रेसोर्ट की अपनी विशिष्टता है। इसमें सभी आधुनिक सुविधाओं के साथ टेंट में ठहरने की व्यवस्था है. यह स्थान बिलकुल घाटी में है. पहाड़ों की श्रृंखला इस स्थान से सामने

दिखती है. नुब्रा घाटी का हुन्डर विलेज प्रकृति के अद्‌भुत सुंदरता से परिपूर्ण है और मन को अवाक कर देतें है. एक तरफ धवल सफेद बालू, मानो प्रकृति के श्वेत धवल अच्छत फैले हुए हों तो दूसरे तरफ ऊँचे पहाड़. ये सफेद बालू मनोरम सैंड डून्स का भी निर्माण करते हैं. पास में एक नदी की कल–कल छल–छल धार सुंदरता में संगीत का समावेश करती है. सभी मिलकर प्राकृतिक दृश्य को और भी मनोरम कर देते है.

चौथे दिन हमने प्रातः 7:00 बजे पेंगोंग त्से / लेक के लिए यात्रा आरम्भ की. 6 घंटे की यात्रा उपरान्त 1 बजे दिन में वहां पहुंच गए. रास्ते का कुछ भाग काफी दुर्गम था. इस रास्ते में मोबाइल सिग्नल कहीं भी नहीं मिला. हिमालय पर 14000 फुट की उचाई पर स्थित यह एक अनूठा झील है. पानी गहरा नीला. पर कुछ कुछ देर में हरा, लाल, पीला आदि रंगों में बदलता रहता है. यह इसकी एक विशिष्टता है.

इसका जल थोड़ा खारा है. 130 किलोमीटर लम्बी इस झील का 40: भाग भारत में है, शेष भाग 1958 से तिब्बत ६ चीन के पास है. लोगों का कहना था की झील के दूसरे तरफ के ग्लेशियर के पीछे चीन की सेना है. जाड़े के दिनों में यह झील पूरा बर्फ से जम जाता है. भारत के ऐसे दुर्गम स्थल पहुंच कर मन रोमांचित हो उठा, मन इस अनूठी छटां को छोड़कर जाने को नहीं कर रहा था, लेकिन हमें वापस लेह आज ही लौटना था. रात में यहाँ का ऑक्सीजन स्तर और भी निचे आ जाता है सके कारण यहाँ रुकना श्रेयकर नहीं है. रात में वापस लेह विश्राम किया गया .

पांचवे दिन वापस दिल्ली प्रस्थान.

आज भी मेरा मन कभी लेह लद्दाख के अवर्णनीय सुंदरता में खो जाता है तो कभी भारत के बहादुर सैनिकों के प्रति संवेदना से भर जाता है जो इस दुर्गम क्षेत्र में दिन रात चौकस होकर देश की रक्षा करतें है.

★★★★★★★★★★

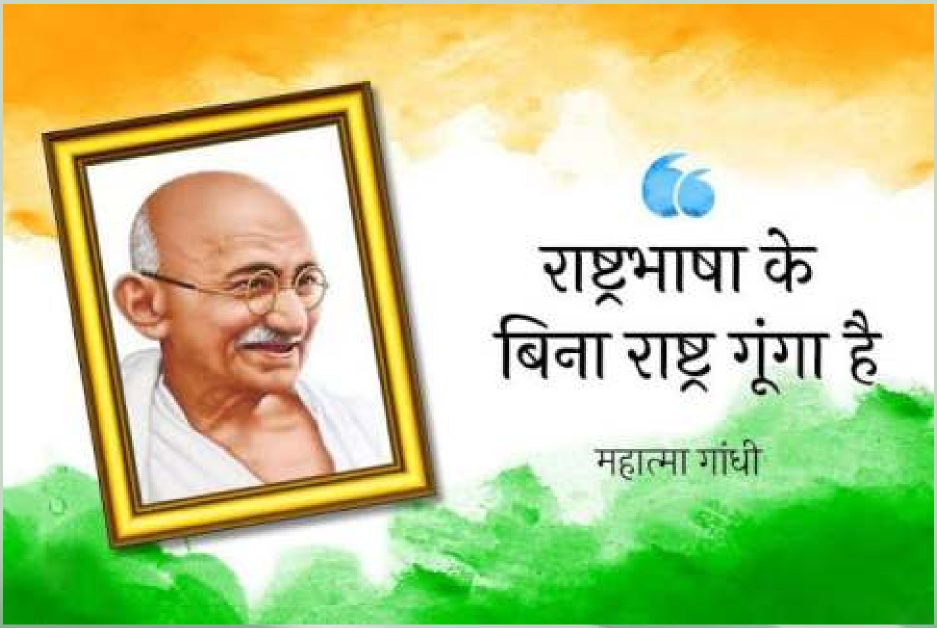

गदरा रोड (बाड़मेर), राजस्थान में टूलकिट वितरण

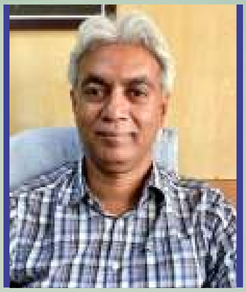

रजनीश बनकर
सहायक महाप्रबंधक
कलस्टर विभाग

नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कार्पोरेशन (एनएसएफडीसी) एवं विकास आयुक्त (हस्तशिल्प), वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार के बीच दिनांक 20.02.17 को एक "समझौता ज्ञापन" हस्ताक्षरित किया गया था। इस समझौते के अंतर्गत वर्ष 2017–18 में राजस्थान में पूगल, बीकानेर तथा गदरा रोड, बारमेर में कशादिकारी से जुड़े करीब 1050 महिला शिल्पकारों का क्लस्टर निर्माण किया गया तथा विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) की AHVY योजना के अंतर्गत मंजूर के गई गतिविधियों के अंतर्गत प्रशिक्षण दिया गया तथा टूलकिट वितरित किये गए थे। इसी क्रम में मुझे जनवरी, 2022 में 200 अतिरिक्त टूलकिट वितरित करने की जिम्मेदारी दी गई।

इस बार दौरे में मेरे साथ अ.प्र.नि. महोदय तथा सहायक महाप्रबंधक (प्रोटोकॉल) भी शामिल थे। गगरिया स्टेशन, गदरा रोड़ (बाड़मेर), राजस्थान में दिनांक 21.01.22 को कशीदाकारी से जुडी 100 महिला शिल्पकारों को अ.प्र.नि महोदय द्वारा टूलकिट के रुप में Motorized सिलाई मशीन का वितरण किया गया। अ.प्र.नि महोदय द्वारा संबोधन में निगम की रियायती ब्याज दर पर उपलब्ध ऋण योजनाओं के बारे में जानकारी दी तथा उन्होंने सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान हेतु योजनाओं का लाभ उठाने के लिए शिल्पकारो को प्रोत्साहित किया।

इस कार्यक्रम में राज्य सरकार तथा विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) के अधिकारी मंच पर उपस्थित थे। BDO ब्लाकः रामसर द्वारा महिला शिल्पकारो को अपने बच्चों को शिक्षित करने के लिए प्रेरित किया तथा पुरानी रुढ़िवादी परम्पराओं से उभरने पर जोर दिया। सहायक निदेशक, हस्तशिल्प (जोधपुर) द्वारा वस्त्र मंत्रालय की योजनाओं का भी लाभ लेने की सलाह दी। मेरे द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। समापन के पश्चात् रामसर में इन्ही शिल्पकारों के मुखिया के घर में भोजन की व्यवस्था की गई थी तथा सभी गणमान्य व्यक्तियों द्वारा स्वादिष्ट राजस्थानी व्यंजनो का आनंद लिया।

यह कार्यक्रम भारत सरकार द्वारा प्रायोजित "आज़ादी के अमृत महोत्सव" के अंतर्गत आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य महिला शिल्पकारों को सिलाई मशीन द्वारा अतिरिक्त आमदनी से आत्मनिर्भर तथा सशक्त किया जाना था। मुझे यह जानकारी दी गई कि राजस्थान के सवर्णों में मुख्यतः राजपूतों में भ्रूण हत्या अभी भी प्रचलित है जो मेरे लिए अविश्वसनीय था कि वर्तमान में भी ऐसी प्रथा जीवित है। मैं यह सोचने लगा कि नैतिक तौर पर फिर श्रेष्ठ कौन है ?

एनएसएफडीसी की लाभार्थी श्रीमती दीप्ति. टी

श्रीमती दीप्ति.टी केरल के कोल्लम की रहने वाली हैं। वह एक सर्टिफाइड ब्यूटीशियन हैं। वह अपना ब्यूटी पार्लर खोलना चाहती थी। लेकिन उसके पास अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए पर्याप्त पैसा नहीं था। इसलिए, उसके एक मित्र ने उसे एनएसएफडीसी की कम ब्याज दर वाली ऋण योजनाओं के बारे में बताया।

श्रीमती दीप्ति ने केरल राज्य महिला विकास निगम लिमिटेड (KSWDC) के माध्यम से ऋण के लिए आवेदन किया और 2021 में ₹3,92,000/– की ऋण राशि प्राप्त की। वर्तमान में, उनका व्यवसाय अच्छा चल रहा है। वह प्रति माह लगभग 40,000 रुपये की आय अर्जित कर रही है। अब उनकी देखरेख में दो महिला कर्मचारी काम कर रही हैं। आज वे आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त महसूस करती है और अपने परिवार को आर्थिक रूप से समर्थन देने में सक्षम है। श्रीमती दीप्ति.टी समय पर मदद के लिए एनएसएफडीसी की आभारी हैं।

★★★★★★★★★★★

साहित्यिकी

चीनी फेरी वाला

–महादेवी वर्मा

मुझे चीनियों में पहचान कर स्मरण रखने योग्य विभिन्नता कम मिलती है। कुछ समतल मुख एक ही साँचे में ढले से जान पड़ते हैं और उनकी एकरसता दूर करने वाली, वस्त्र पर पड़ी हुई सिकुड़न जैसी नाक की गठन में भी विशेष अंतर नहीं दिखाई देता।

कुछ तिरछी अधखुली और विरल भूरी बरूनियों वाली आँखों की तरल रेखाकृति देख कर भ्रांति होती है कि वे सब एक नाप के अनुसार किसी तेज धार से चीर कर बनाई गई हैं। स्वाभाविक पीतवर्ण धूप के चरण चिह्नों पर पड़े हुए धूल के आवरण के कारण कुछ ललछौंहे सूखे पत्ते की समानता पर लेता है। आकार प्रकार वेशभूषा सब मिल कर इन दूर देशियों को यंत्र चालित पुतलों की भूमिका दे देते हैं, इसी से अनेक बार देखने पर भी एक फेरी वाले चीनी को दूसरे से भिन्न कर के पहचानना कठिन है।

पर आज उन मुखों की एकरूप समष्टि में मुझे आर्द्र नीलिमामयी आँखों के साथ एक मुख स्मरण आता है जिसकी मौन भंगिमा कहती है – "हम कार्बन की कापियाँ नहीं हैं। हमारी भी एक कथा है। यदि जीवन की वर्णमाला के संबंध में तुम्हारी आँखें निरक्षर नहीं तो तुम पढ़ कर देखो न!"

कई वर्ष पहले की बात है मैं तांगे से उतर कर भीतर आ रही थी कि भूरे कपड़े का गठ्ठर बाएँ कंधे के सहारे पीठ पर लटकाए हुए और दाहिने हाथ में लोहे का गज घुमाता हुआ चीने फेरी वाला फाटक के बाहर आता हुआ दिखा। संभवतः मेरे घर को बंद पाकर वह लौटा जा रहा था। "कुछ लेगा मेमसाहब!" – दुर्भाग्य का मारा चीनी! उसे क्या पता कि वह संबोधन मेरे मन में रोष की सबसे तुंग तरंग उठा देता है। मइया, माता, जीजी, दिदिया, बिटिया आदि न जाने कितने संबोधनों से मेरा परिचय है और सब मुझे प्रिय हैं, पर यह विजातीय संबोधन मानो सारा परिचय छीन कर मुझे गाउन में खड़ा कर देता है। इस संबोधन के उपरांत मेरे पास से निराश होकर न लौटना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है।

मैने अवज्ञा से उत्तर दिया–मैं फारनर (विदेशी) नहीं ख़रीदती।

"हम क्या फारनर है? हम तो चाइना से आता है।" कहने वाले के कंठ में सरल विस्मय के साथ उपेक्षा की चोट से उत्पन्न क्षोभ भी था। इस बार रुक कर उत्तर देने वाले को ठीक से देखने की इच्छा हुई। धूल से मटमैले सफेद किरमिच के जूते में छोटे पैर छिपाए, पतलून और पाजामे का सम्मिश्रित परिणाम जैसा पाजामा और कुर्ता तथा कोट की एकता के आधार पर सिला कोट पहने, उधड़े हुए किनारों से पुरानेपन की घोषणा करते हुए हैट से आधा माथा ढके दाढ़ी मूछ विहीन दुबली नाटी जो मूर्ति खड़ी थी वह तो शाश्वत चीनी है। उसे सबसे अलग कर के देखने का प्रश्न जीवन में पहली बार उठा।

मेरी उपेक्षा से उस विदेशी को चोट पहुँची, यह सोच कर मैंने अपनी नहीं को और अधिक कोमल बनाने का प्रयास किया, "मुझे कुछ नहीं चाहिए भाई।" चीनी भी विचित्र निकला, "हमको भाय बोला है, तुम जरूर लेगा, जरूर लेगा– हाँ?" 'होम करते हाथ जला' वाली कहावत हो गई – विवश कहना पड़ा, "देखूँ, तुम्हारे पास है क्या।" चीनी बरामदे में कपड़े का गठ्ठा उतारता हुआ कह

चला, "भोत अच्छा सिल्क आता है सिस्तर! चाइना सिल्क क्रेप. . ." बहुत कहने सुनने के उपरांत दो मेजपोश ख़रीदना आवश्यक हो गया। सोचा– चलो छुट्टी हुई, इतनी कम बिक्री होने के कारण चीनी अब कभी इस ओर आने की भूल न करेगा।

पर कोई पंद्रह दिन बाद वह बरामदे में अपनी गठरी पर बैठ कर गज को फर्श पर बजा–बजा कर गुनगुनाता हुआ मिला। मैंने उसे कुछ बोलने का अवसर न दे कर, व्यस्त भाव से कहा, "अब तो मैं कुछ न लूँगी। समझे?" चीनी खड़ा होकर जेब से कुछ निकालता हुआ प्रफुल्ल मुद्रा से बोला, "सिस्तर आपका वास्ते ही लाता है, भोत बेस्त सब सेल हो गया। हम इसको पाकेट में छिपा के लाता है।"

देखा– कुछ रूमाल थे ऊदी रंग के डोरे भरे हुए, किनारों का हर घुमाव और कोनों में उसी रंग से बने नन्हें फूलों की प्रत्येक पंखुड़ी चीनी नारी की कोमल उँगलियों की कलात्मकता ही नहीं व्यक्त कर रही थी, जीवन के अभाव की करुण कहानी भी कह रही थी। मेरे मुख के निषेधात्मक भाव को लक्ष्य कर अपनी नीली रेखाकृत आँखों को जल्दी–जल्दी बंद करते और खोलते हुए वह एक साँस में "सिस्तर का वास्ते लाता है, सिस्तर का वास्ते लाता है!" दोहराने लगा।

मन में सोचा, अच्छा भाई मिला है! बचपन में मुझे लोग चीनी कह कर चिढ़ाया करते थे। संदेह होने लगा, उस चिढ़ाने में कोई तत्व भी रहा होगा। अन्यथा आज एक सचमुच का चीनी, सारे इलाहाबाद को छोड़ कर मुझसे बहन का संबंध क्यों जोड़ने आता! पर उस दिन से चीनी को मेरे यहाँ जब तब आने का विशेष अधिकार प्राप्त हो गया है। चीन का साधारण श्रेणी का व्यक्ति भी कला के संबंध में विशेष अभिरुचि रखता है इसका पता भी उसी चीनी की परिष्कृत रुचि में मिला।

नीली दीवार पर किस रंग के चित्र सुंदर जान पड़ते हैं, हरे कुशन पर किस प्रकार के पक्षी अच्छे लगते हैं, सफेद पर्दे के कोने में किस बनावट के फूल पत्ते खिलेंगे आदि के विषय में चीनी उतनी ही जानकारी रखता था, जितनी किसी अच्छे कलाकार से मिलेगी। रंग से उसका अति परिचय यह विश्वास उत्पन्न कर देता था कि वह आँखों पर पट्टी बाँध देने पर भी केवल स्पर्श से रंग पहचान लेगा।

चीन के वस्त्र, चीन के चित्र आदि की रंगमयता देखकर भ्रम होने लगता है कि वहाँ की मिट्टी का हर कण भी इन्हीं रंगों से रंगा हुआ न हो। चीन देखने की इच्छा प्रकट करते ही 'सिस्तर का वास्ते हम चलेगा' कहते–कहते चीनी की आँखों की नीली रेखा प्रसन्नता से उजली हो उठती थी।

अपनी कथा सुनाने के लिए वह विशेष उत्सुक रहा करता था। पर कहने सुनने वाले की बीच की खाई बहुत गहरी थी। उसे चीनी और बर्मी भाषाएँ आती थीं, जिनके संबंध में अपनी सारी विद्या बुद्धि के साथ मैं 'आँख के अंधे नाम नयनसुख' की कहावत चरितार्थ करती थी। अंग्रजी की क्रियाहीन संज्ञाओं और हिंदुस्तानी की संज्ञाहीन क्रियाओं के सम्मिश्रण से जो विचित्र भाषा बनती थी, उसमें कथा का सारा मर्म बँध नहीं पाता था। पर जो कथाएँ हृदय का बाँध तोड़ कर दूसरों को अपना परिचय देने के लिए बह निकलती हैं, प्रायः करुण होती हैं और करुणा की भाषा शब्दहीन रह कर भी बोलने में समर्थ है। चीनी फेरीवाले की कथा भी इसका अपवाद नहीं।

जब उनके माता पिता ने माडले (बर्मा) आकर चाय की छोटी दूकान खोली तब उसका जन्म नहीं हुआ था। उसे जन्म देकर और सात वर्ष की बहन के संरक्षण में छोड़ कर जो परलोक सिधारी उस अनदेखी माँ के प्रति चीनी की श्रद्धा अटूट थी।

संभवतः माँ ही ऐसी प्राणी है जिसे कभी न देख पाने पर भी मनुष्य ऐसे स्मरण करता है जैसे उसके संबंध में जानना बाकी नहीं। यह स्वाभाविक भी है।

मनुष्य को संसार में बाँधने वाला विधाता माता ही है इसी से उसे न मान कर संसार को न मानना सहज है। पर संसार को मानकर उसे मानना असंभव ही रहता है।

पिता ने जब दूसरी बर्मी चीनी स्त्री को गृहणी पद पर अभिषिक्त किया तब उन मातृहीनों की यातना की कठोर कहानी आरंभ हुई। दुर्भाग्य इतने से ही संतुष्ट नहीं हो सका क्यों कि उसके पाँचवें वर्ष में पैर रखते–रखते एक दुर्घटना में पिता ने भी प्राण खोए।

अब अबोध बालकों के समान उसने सहज ही अपनी परिस्थितियों से समझौता कर लिया पर बहन और विमाता में किसी प्रस्ताव को लेकर जो वैमनस्य बढ़ रहा था वह इस समझौते को उत्तरातर विषाक्त बनाने लगा। किशोरी बालिका की अवज्ञा का बदला उसको नहीं उसके अबोध भाई को कष्ट देकर भी चुकाया जाता था। अनेक बार उसने ठिठुरती हुई बहन की कंपित उँगलियों में अपना हाथ रख उसके मलिन वस्त्रों में अपने आँसुओं से धुला मुख किया और उसी की छोटी–सी गोद में सिमट कर भूख भुलाई थी। कितनी ही बार सवेरे आँख मूँद कर बंद द्वार के बाहर दिवार से टिकी हुई बहन को ओस से गीले बालों में अपनी ठिठुरती हुई उँगलियों को गर्म करने का व्यर्थ प्रयास करते हुए उसने पिता के पास जाने का रास्ता पूछा था। उत्तर में बहन के फीके गाल पर चुपचाप ढुलक आने वाले आँसू की बड़ी बूँद देख कर वह घबरा कर बोल उठा था – "उसे कहना नहीं चाहिए, वह तो पिता को देखना भर चाहता है।"

कई बार पड़ोसियों के यहाँ रकाबियाँ धोकर और काम के बदले भात माँग कर बहन ने भाई को खिलाया था। व्यथा की कौन–सी अंतिम मात्रा ने बहन के नन्हें हृदय का बाँध तोड़ डाला, इसे अबोध बालक क्या जाने पर एक रात उसने बिछौने पर लेट कर बहन की प्रतीक्षा करते–करते आधी आँख खोली और विमाता को कुशल बाजीगर की तरह मैली कुचौली बहन का काया पलट करते हुए देखा। उसके सूखे ओठों पर विमाता की मोटी उँगली ने दौड़–दौड़ कर लाली फेरी, उसके फीके गालों पर चौड़ी हथेली ने घूम–घूम कर सफेद गुलाबी रंग भरा, उसके रुखे बालों को कठोर हाथों ने घेरे–घेर कर सँवारा और तब नए रंगीन वस्त्रों में सजी हुई उस मूर्ति को एक प्रकार से ठेलती हुई विमाता रात के अंधकार में बाहर अंतरनिहित हो गई।

बालक का विस्मय भय में बदल गया और भय ने रोने में शरण पायी। कब वह रोते–रोते सो गया इसका पता नहीं, पर जब वह किसी के स्पर्श से जागा तो बहन उस गठरी बने हुए भाई के मस्तक पर मुख रख कर सिसकियाँ रोक रही थी। उस दिन उसे अच्छा भोजन मिला दूसरे दिन कपड़े तीसरे दिन खिलौने – पर बहन के दिनों–दिन विवर्ण होने वाले होंठों पर अधिक गहरे रंग की आवश्यकता पड़ने लगी, उसके उत्तरोतर फीके पड़ने वाले गालों पर देर तक पाउडर मला जाने लगा।

बहन के छीजते शरीर और घटती शक्ति का अनुभव बालक करता था, पर वह किससे कहे, क्या करें, यह उसकी समझ के बाहर की बात थी। बार–बार सोचता था पिता का पता मिल जाता तो सब ठीक हो जाता। उसके स्मृति पट पर माँ की कोई रेखा नहीं परंतु पिता का जो अस्पष्ट चित्र अंकित था उनके स्नेहशील होने में संदेह नहीं रह जाता। प्रतिदिन निश्चित करता कि दुकान में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति से पिता का पता पूछेगा और एक दिन चुपचाप उनके पास पहुँचेगा और उसी तरह चुपचाप उन्हें घर लाकर खड़ा कर देगा– तब यह विमाता कितनी डर जाएगी और बहन कितनी प्रसन्न होगी।

चाय की दुकान का मालिक अब दूसरा था, परंतु पुराने मालिक के पुत्र के साथ उसके व्यवहार में सह्रदयता कम नहीं रही, इसीसे बालक एक कोने में सिकुड़ कर खड़ा हो गया और आने वालों से हकला हकला कर पिता का पता पूछने लगा। कुछ ने उसे आश्चर्य से देखा, कुछ मुस्करा दिये, पर एक दो ने दुकानदार से कुछ ऐसी बात कही जिससे वह बालक को हाथ पकड़ कर बाहर ही छोड़ आया। इस भूल की पुनरावृत्ति होने पर विमाता से दंड दिलाने की धमकी भी दे गया। इस प्रकार उसकी खोज का अंत हो गया।

बहन का संध्या होते ही कायापलट, फिर उसका आधी रात बीत जाने पर भारी पैरों से लौटना, विशाल शरीर वाली विमाता का जंगली बिल्ली की तरह हल्के पैरों से बिछौने से उछल कर उतर आना, बहन के शिथिल हाथों से बटुए का छिन जाना और उसका भाई के मस्तक पर मुख रख कर स्तब्ध भाव से पड़े रहना आदि क्रम ज्यों के त्यों चलते रहे।

पर एक दिन बहन लौटी ही नहीं। सवेरे विमाता को कुछ चिंतित भाव से उसे खोजते देख बालक सहसा किसी अज्ञात

भय से सिहर उठा। बहिन– उसकी एकमात्र आधार बहन! पिता का पता न पा सका और अब बहन भी खो गई। जैसा था वैसा ही बहन को खोजने के लिए गली–गली में मारा–मारा फिरने लगा। रात में वह जिस रूप में परिवर्तित हो जाती उसमें दिन को उसे पहचान सकना कठिन था इससे वह जिसे अच्छे कपड़े पहने हुए जाती देखता उसके पास पहुँचने के लिए सड़क के एक ओर से दूसरी ओर दौड़ पड़ता। कभी किसी से टकरा कर गिरते–गिरते बचता, कभी किसी से गाली खाता, कभी कोई दया से प्रश्न कर बैठता– "क्या इतना जरा–सा लड़का भी पागल हो गया है?"

इसी प्रकार भटकता हुआ वह गिरहकटों के गिरोह के हाथ लगा और तब उसकी शिक्षा आरंभ हुई। जैसे लोग कुत्ते को दो पैरों से बैठना, गर्दन ऊँची कर खड़ा होना, मुँह पर पंजे रख कर सलाम करना आदि करतब सिखाते हैं उसी तरह वे सब उसे तंबाकू के धुएँ और दुर्गंध मांस से भरे और फटे चीथड़े, टूटे बर्तन और मैले शरीर से बसे हुए कमरे में बंद कर कुछ विशेष संकेतों और हँसने रोने के अभिनय में पारंगत बनाने लगे।

कुत्ते के पिल्ले के समान ही वह घुटनों के बल खड़ा रहता और हँसने रोने की विविध मुद्राओं का अभ्यास करता। हँसी का स्त्रोत इस प्रकार सूख चुका था कि अभिनय में भी वह बार–बार भूल करता और मार खाता। पर क्रंदन उसके भीतर इतना अधिक उमड़ा रहता था कि जरा मुँह के बनाते ही दोनों आँखों से दो गोल–गोल बूँदें नाक के दोनों ओर निकल आतीं और पतली समानांतर रेखा बनाती और मुँह के दोनों सिरों को छूती हुई ठुड्डी के नीचे तक चली जातीं। इसे अपनी दुर्लभ शिक्षा का फल समझ कर रोओं से काले उदर पर पीला–सा रंग बाँधने वाला उसका शिक्षक प्रसन्नता से उठ कर उसे लात जमा कर पुरस्कार देता।

वह दल बर्मी, चीनी, स्यामी आदि का सम्मिश्रण था। इसी से 'चोरों की बारात में अपनी अपनी होशियारी' के सिद्धांत का पालन बड़ी सतर्कता से हुआ करता। जो उसपर कृपा रखते थे उनके विरोधियों का स्नेहपात्र होकर पिटना भी उसका परम कर्तव्य हो जाता था। किसी की कोई वस्तु खोते ही उस पर संदेह की ऐसी दृष्टि आरंभ होती कि बिना चुराए ही वह चोर के समान काँपने लगता और तब उस 'चोर के घर छिछोर' की जो मरम्मत होती कि उसका स्मरण कर के चीनी की आँखें आज भी व्यथा और अपमान से भक भक जलने लगती थीं।

सबके खाने के पात्र में बचा उच्छिष्ट एक तामचीनी के टेढ़े बर्तन में सिगार से जगह जगह जले हुए कागज से ढक कर रख दिया जाता था जिसे वह हरी आँखों वाली बिल्ली के साथ खाता था।

बहुत रात गए तक उसके नरक के साथी एक–एक कर आते रहते और अंगीठी के पास सिकुड़ कर लेटे हुए बालक को ठुकराते हुए निकल जाते। उनके पैरों की आहट को पढ़ने का उसे अच्छा अभ्यास हो चला था। जो हल्के पैरों को जल्दी–जल्दी रखता आता है उसे बहुत कुछ मिल गया है। जो शिथिल पैरों को घसीटता हुआ लौटता वह खाली हाथ है। जो दीवार को टटोलता हुआ लड़खड़ाते पैरों से बढ़ता वह शराब में सब खोकर बेसुध आया है। जो दहली से ठोकर खाकर धम धम पैर रखता हुआ घुसता है उसने किसी से झगड़ा मोल ले लिया है आदि का ज्ञान उसे अनजान में ही प्राप्त हो गया था।

यदि दीक्षांत संस्कार के उपरांत विद्या के उपयोग का श्रीगणेश होते ही उसकी भेंट पिता के परिचित एक चीनी व्यापारी से नहीं हो जाती तो इस साधना से प्राप्त विद्वत्ता का अंत क्या होता यह बताना कठिन है। पर संयोग ने उसके जीवन की दिशा को इस प्रकार बदल दिया कि वह कपड़े की दूकान पर व्यापारी की विद्या सीखने लगा।

प्रशंसा का पुल बाँधते–बाँधते वर्षों पुराना कपड़ा सबसे पहले उठा लाना, गज से इस तरह नापना कि जो रत्ती बराबर भी आगे न बढे, चाहे अँगुल भर पीछे रह जाय। रुपए से ले के पाई तक को खूब देख भाल कर लेना और लौटाते समय पुराने, खोटे पैसे विशेष रूप से खनखा–खनका कर दे डालना आदि का ज्ञान कम रहस्यमय नहीं था। पर मालिक के साथ भोजन मिलने के कारण बिल्ली के उच्छिष्ट सहभोज की आवश्यकता नहीं रही और दुकान में सोने की व्यवस्था होने से अंगीठी के पास ठोकरों से पुरस्कृत होने की विशेषता जाती रही। चीनी छोटी अवस्था में ही समझ गया था कि धन संचय से संबंध रखने वाली सभी विद्याएँ एक–सी हैं, पर मनुष्य किसी का प्रयोग प्रतिष्ठापूर्वक कर सकता है और किसी का छिपा कर।

कुछ अधिक समझदार होने पर उसने अपनी अभागी बहन को ढूँढने का बहुत प्रयत्न किया पर उसका पता न पा सका। ऐसी बालिकाओं का जीवन खतरे से खाली नहीं रहता। कभी वे मूल्य देकर खरीदी जाती हैं और कभी बिना मूल्य के गायब कर दी जाती हैं। कभी वे निराश हो कर आत्महत्या कर लेती हैं और कभी शराबी ही नशे में उन्हें जीवन से मुक्त कर देते हैं। उस रहस्य

की सूत्रधारिणी विमाता भी संभवतः पुर्नविवाह कर किसी और को सुखी बनाने के लिये कहीं दूर चली गयी थी। इस प्रकार उस दिशा में खोज का मार्ग ही बंद हो गया।

इसी बीच में मालिक के काम से चीनी रंगून आया फिर दो वर्ष कलकत्ता में रहा और अन्य साथियों के साथ उसे इसि ओर आने का आदेश मिला। यहां शहर में एक चीनी जूते वाले के घर ठहरा है और सवेरे आठ से बारह और दो से छे बजे तक फेरी लगा कर कपड़े बेचता रहता है।

चीनी की दो इच्छाएँ हैं, ईमानदार बनने की और बहन को ढूँढ लेने की– जिनमें से एक की पूर्ति तो स्वयं उसी के हाथ में है और दूसरी के लिए वह प्रतिदिन भगवान बुद्ध से प्रार्थना करता है।

बीच–बीच में वह महीनों के लिए बाहर चला जाता था, पर लौटते ही "सिस्तर का वास्ते ई लाता है" कहता हुआ कुछ लेकर उपस्थित हो जाता। इस प्रकार देखते–देखते मैं इतनी अभ्यस्त हो चुकी थी कि जब एक दिन वह "सिस्तर का वास्ते" कह कर और शब्दों की खोज करने लगा तब मैं उसकी कठिनाई न समझ कर हँस पड़ी। धीर–धीरे पता चला – बुलावा आया है, यह लड़ने के लिए चाइना जाएगा। इतनी जल्दी कपड़े कहाँ बेचे और न बेचने पर मालिक को हानि पहुँचा कर बेइमान कैसे बने? यदि मैं उसे आवश्यक रुपया देकर सब कपड़े ले लूँ, तो वह मालिक का हिसाब चुका कर तुरंत देश की ओर चल दे।

किसी दिन पिता का पता पूछे जाने पर वह हकलाया था– आज भी संकोच से हकला रहा था। मैंने सोचने का अवकाश पाने के लिए प्रश्न किया, "तुम्हारे तो कोई है ही नहीं, फिर बुलावा किसने भेजा?" चीनी की आँखें विस्मय से भर कर पूरी खुल गईं– "हम कब बोला हमारा चाइना नहीं है? हम कब ऐसा बोला सिस्तर?" मुझे स्वयं अपने प्रश्न पर लज्जा आई, उसका इतना बड़ा चीन रहते वह अकेला कैसे होगा!

मेरे पास रुपया रहना ही कठिन है, अधिक रुपए की चर्चा ही क्या! पर कुछ अपने पास खोज ढूँढ़ कर और कुछ दूसरों से उधार लेकर मैंने चीनी के जाने का प्रबंध किया। मुझे अंतिम अभिवादन कर जब वह चंचल पैरों से जाने लगा, तब मैंने पुकार कर कहा, "यह गज तो लेते जाओ!" चीनी सहज स्मित के साथ घूमकर "सिस्तर का वास्ते" ही कह सका। शेष शब्द उसके हकलाने में खो गए।

और आज कई वर्ष हो चुके हैं– चीनी को फिर देखने की संभावना नहीं। उसकी बहन से मेरा कोई परिचय नहीं, पर न जाने क्यों वे दोनों भाई बहन मेरे स्मृतिपट से हटते ही नहीं।

चीनी की गठरी में से कई थान मैं अपने ग्रामीण बालकों के कुर्ते बना–बना कर खर्च कर चुकी हूँ परंतु अब भी तीन थान मेरी अलमारी में रखे हैं और लोहे का गज दीवार के कोने में खड़ा है। एक बार जब इन थानों को देख कर एक खादी भक्त बहन ने आक्षेप किया था – जो लोग बाहर विशुद्ध खद्दरधारी होते हैं वे भी विदेशी रेशम के थान ख़रीद कर रखते है, इसी से तो देश की उन्नति नहीं होती– तब मैं बड़े कष्ट से हँसी रोक सकी।

वह जन्म का दुखियारा मातृ पितृ हीन और बहन से बिछुड़ा हुआ चीनी भाई अपने समस्त स्नेह के एकमात्र आधार चीन में पहुँचने का आत्मतोष पा गया है, इसका कोई प्रमाण नहीं– पर मेरा मन यही कहता है।

साभार : महादेवी वर्मा प्रतिनिधि गद्य रचनाएं (भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन)

★★★★★★★★★★

गजल - इस संगदिल जहां में

श्री पुखराज मीना,
कार्यपालक

इस संगदिल जहां में, कोई नहीं है किसी का,
जिससे भी काम बनता, हो गया है उसी का।

गिरगिट रंग बदलते लोग, हैरत की बात नहीं,
झूठी दुनिया में, सच बना है विषय हँसी का।

अनगिनत ख्वाहिशें, जी का जँजाल बन गई,
सुकून गंवाकर, इँसान मोहताज है खुशी का।

अपनी गलती कबूल करना, हमें आता नहीं,
इँसान की बातों में, झलकता भाव खुदी का।

दिल से दिल अब मिलते कहाँ अब "खराज"
गले लगकर, दिल में अहसास अजनबी का।

गजल-रिश्तों की बुनियाद

रिश्तों की बुनियाद दिनोंदिन अब खोखली होती जा रही हैं,
निज स्वार्थता अब रिश्तों के दरमियाँ हावी होती जा रही है।

रिश्तों मे आपसी सम्मान, विश्वास और ऐतबार नहीं रहा,
रिश्तों की बुनियाद स्वार्थहित तक सिमटती चली जा रही हैं।

लोग यहाँ हरदम अपनों को ही ठगने की फिराक में रहते हैं,
रिश्तों में त्याग, समर्पण की भावनाएँ सकरी होती जा रही हैं।

रिश्ते वो अनमोल दौलत जो जिन्दगी को खूबसूरत बनाते हैं,
सच्चे रिश्तों के अभाव में जिन्दगियाँ उदास होती जा रही हैं।

मर्यादाओं को लाँघकर लोग रिश्तों से खेलने लगें हैं "खराज"
दिन–प्रतिदिन रिश्तों में धोखा, मक्कारी बढ़ती ही जा रही हैं।

★★★★★★★★★★

भारत के माथे की बिंदी यह है अपनी हिंदी

पंकज यादव
इंटरटेक
गुणवत्ता कार्यकारी

"उसने कहा था"

किसने?

पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने

क्या कहा था ?

तेरी कुड़माई हो गई ?

लहना सिंह, लपटन सिंह, वजीरा सिंह, कीरत सिंह

सैकड़ों वर्ष उपरांत भी यह पात्र दिलो–दिमाग पर ऐसे घर कर गए हैं मानो यह सभी पात्र हमारे आसपास ही है।

हिंदी साहित्य का यह घर ही कुछ ऐसा है ऐसे जब भी हम "अपनी खबर" बताने लगे तो साक्षात **"पांडेय बेचौन शर्मा उग्र जी"** याद आ जाते हैं।

रानी केतकी भी भूल गई होंगी उनकी कहानी को किसी **"इंशा अल्लाह खान"** ने हिंदी लिबास में लपेट कर अमर कर दिया ।

यह कारवाँ यही नहीं रुकता, बारिश जब भी अपना श्रृंगार दिखाती है तब हमें **नागार्जुन बाबा** के उस बादल की याद आ जाती है जिसे उन्होंने घिरते हुए देखा था।

बादलों, मेघो और बारिश की बूंदों के बीच रहना है हमें **विद्यानिवास मिश्र** जी से संपर्क करना ही पड़ता है क्योंकि वह **चेरापूंजी से आए हैं** ना –जहां रिमझिम बारिश की फुहार अपने चरमोत्कर्ष पर होती है और हम हिंदी रूपी कस्तूरी मृग की भांति अपने अनंत कलेवरों में ढलते जाते हैं।

एक बार मैंने अपने किसी जान पहचान वाले को कोई काम कह रखा था, महानुभाव समक्ष प्रस्तुत हुए और बोल उठे– या काम तो आधा ही हुआ, मैं अनायास ही बोल उठा– क्या आपने भी **"आधे अधूरे–मोहन राकेश"** कर दिया और फिर सोचता हूं कि क्या कह दिया ?

लेकिन यह विडंबना ही है, कि यह बोल हृदय तल से निकलते हैं, हिंदी साहित्य के यह महनीय नाम यूं ही नहीं बस गए, इनके पीछे इनकी विश्वसनीयता तथा इनका हमारे समाज के समरूप होना है।

जैसे हिंदी फिल्मों में दोस्ती **जय–वीरू** सी हो ऐसा माना जाता है जबकि हमारे हिंदी साहित्य में **"जुम्मनशेख और**

अलगू चौधरी" की दोस्ती बहुत प्रचलित है, अपितु यह प्रेम केवल मानव मात्र तक सीमित नहीं है। पशु भी इस बिरादरी में भी बराबर की हकदार है। जी हां, **हीरा– मोती दो बैलों की कहानी** तो याद होगी ही।

पशु और मानव प्रेम की झांकी भी यहां देखने को मिल जाएगी, **बाबा भारती और उनका घोड़ा सुल्तान जिनका प्यार देखकर डाकू खड़ग सिंह बोल उठा था– कि बाबा यह घोड़ा में आपके पास ना रहने दूँगा!**

हिंदी साहित्य की माधुर्यता इतनी है कि यहां **"नमक के दरोगा"** का वर्चस्व किसी **जनता के दरोगा** से कम नहीं है

साथ–साथ यहां **"कढी में कोयला"** की परिकल्पना भी साक्षात दृष्टिगोचर होती है।

एक दिन **फिल्म Raincoat** देख रहा था अजय देवगन वाली, **बाबू गुलाब राय** की रचना **"नर से नारायण"** मन में गोते लगाने लगी, ताल– तलैया भूल –भुलैया वाली feelings आई, आषाढ़ का महीना भी चल रहा था, **वो कहते हैं ना जैसे रोगिया चाहे वैसे वैद्या फरमाए**, डिट्टो वैसे ही हो रहा था –बाहर सब बारिश से लबालब, **टीवी पर Raincoat** और मन में **"बाबू गुलाब राय"** की **"नर से नारायण"**

उस आषाढ़ महीने में मन में जो **"गुलाब राय थे"** वे तुरंत अपने बगलगीर **"मोहन राकेश जी"** के पास पहुंचे और बोल उठे–ई बताइए कि आपने जो **"आषाढ़ का एक दिन"** नाटक रचा है उसकी Recipe क्या है ?

मोहन राकेश जी बोल उठे –हम सब **"सफर के साथी हैं"** ये रास्ते जिनको जैसे दिखे, वैसे ही उन्होंने उसे अपना कर उसे वैसा ही नाम दे दिया, जैसे **"भगवती चरण वर्मा जी"** ने इसे **"टेढे–मेढे रास्ते"** बताया तो ठीक इसके विपरीत इनके सुदूर **"तिरुमल्ले नम्बाकाम वीर राघव आचार्य"** जो मूल रूप से तिरुपति आंध्र प्रदेश के थे, घबराइए मत इनके वृहद नाम के विपरीत इनकी साहित्यिक सरलता इसी बात से प्रतीत होती है कि उन्होंने अपना नया साहित्यिक नाम –हिंदी की सरसता के अनुरूप –**"रांगेय–राघव"** रखा, और भगवती चरण वर्मा के समानांतर ही चले एक रास्ता, तीन लोग लेकिन नाम भिन्न–भिन्न, यही तो सुंदरता है हिंदी साहित्य की **"भगवती चरण वर्मा जी"** ने इन रास्तों को **"टेढ़े– मेढ़े रास्ते"** कहा जबकि **रांगेय–राघव** ने इसे नाम दिया **"सीधा–साधा रास्ता"** मोहन राकेश जी ने इन दोनों लोगों के समुच्चय को नाम दिया–**"सफर के साथी"**

गुलाब राय को इस Recipe में नमक भी मिला, साथ– साथ चीनी और गुड़ की मिठास और इमली की चटकार मिल गई, यह सब कुछ ठीक वैसे ही था जैसे **"कमलेश्वर"** जी ने अपने उपन्यास का जो नाम दिया **"एक सड़क सत्तावन गलियाँ"**

हिंदी साहित्य रूपी एक सड़क में **यह 57 गलियाँ** हमें पूर्ण रूप से हिंदी के इस छोर से उस छोर के दर्शन कराती हैं, आइए और इस सफर के साथी बन जाइए कसम से गर्व से बोल उठेंगे **भारत के माथे की बिंदी यह है अपनी हिंदी**

★★★★★★★★★★★

विविध

बैडमिंटन

श्रीमती कांता कुमारी
उप प्रबंधक (समन्वय)

बैडमिंटन खेल पूरी दुनियाँ में कुछ पसंद किये जाने वाले खेलों में शुमार है। खेल का मानव जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। सबसे पहला की खेल किसी भी इंसान को यह बोध कराता रहता है कि जीवन भी एक खेल के जैसे ही है जिसमें श्रम, समय और शक्ति का सही उपयोग करने की सीख मिलती है और सबसे बड़ी सीख कभी भी हार न मानने की मिलती है।

खेल हमें यह आभास कराते रहते हैं की अगर मेहनत अच्छे से किया जाय तो जीत मिलती है और अगर ध्यान और जागरूकता न बढ़ाई जाए तो हार भी मिलती है और कभी कभी मेहनत के बाद भी जीत नहीं मिलती तो कभी कम मेंहनत में भी जीत मिल जाती अर्थात खेल हमें संतुलित रहने की सीख देते हैं।

वर्तमान में भी हम ऐसी ही दुनिया में रहते हैं जब भी किसी और को खेलते हुए देखते हैं तो हम भी खेलने लगते हैं। इस गेम को खेलने के लिए फुर्ती की जरुरत होती हैं । बैडमिंटन खेलने के लिए हम जिन रेकेट का इस्तेमाल करते हैं वो आमतौर पर काफी हल्के होते हैं और आसानी से इधर–उधर लाये जा सकते हैं।

1960 में एक अंग्रेज लेखक "इसहाक स्प्राट" ने बैडमिंटन बैटलडोर नामक एक किताब लिखी थी। जिसमें इस खेल का विवरण दिया था । लेकिन समय के साथ इस किताब का अस्तित्व समाप्त हो गया और बैडमिंटन खेल को 1873 में ग्लुटरशायर इंग्लैंड में अंग्रेजों द्वारा विकसित नए खेल के रूप में पहली बार खेला गया, तब तक इसे "बैडमिंटन के खेल" के नाम से जाना जाता था जिसे बाद में सुधार कर "बैडमिंटन" कर दिया गया ।

1893 में इंग्लैंड बैडमिंटन एसोसिएशन ने बैडमिंटन के नियमों की सूची जारी की और 13 सितम्बर 1913 में पहली बार बैडमिंटन को आधिकारिक तौर पर शुरू किया गया और लगभग छः साल बाद 1899 में इंग्लैंड बैडमिंटन एसोसिएशन ने ऑल इंग्लैंड ओपन बैडमिंटन चौम्पियनशिप भी शुरू की जो दुनियाँ की पहली बैडमिंटन प्रतियोगिता बनी।

अंतर्राष्ट्रीय बैडमिंटन महासंघ (IBF) जिसे अब विश्व बैडमिंटन संघ बीडब्ल्युएफ के नाम से जाना जाता है उसे सन् 1934 में स्थापित किया गया। भारत देश सन् 1936 में एक सहयोगी के रूप में इसमें शामिल हुआ। बीडब्ल्युएफ अब अंतर्राष्ट्रीय बैडमिंटन खेल को नियंत्रित करता है और खेल को दुनिया भर में विकसित करता है।

इस खेल के नियम इंग्लैंड में बने परन्तु इस खेल में डेनमार्क का दबदबा है। इंडोनेशिया, दक्षिण कोरिया और मलेशिया जैसे देश इस खेल के बेहतरीन खिलाड़ी तैयार कर रहें हैं चीन जैसे देशों का आज भी इस खेलों में दबदबा है लेकिन भारत भी इस खेल में बहुत तेजी से अपने पैर पसार रहा है ।

बैडमिंटन खेल के नियम

बैडमिंटन खेल यह सरलता से खेला जा सकने वाला और सस्ता खेल है इस खेल को खेलने के लिए कम से कम दो लोगों की आवश्यकता होती है दोनों खिलाडियों को एक–एक बैट दिया जाता है और एक शटलकॉक को उसी बैट के माध्यम से अपने पाले में गिरने से बचाने के लिए उसे बांधे हुए नेट के ऊपर से प्रतिद्वंदी के पाले में मारना होता है। बैडमिंटन खेलने वाले जगह को बैडमिंटन कोर्ट कहते हैं जिसकी लम्बाई 13.4 मीटर और चौड़ाई 6.1 मीटर होती है ।

बैडमिंटन खेल के मुख्य नियम निम्न है–

- बैडमिंटन मैच से पहले एक सिक्का उछाला जाता है और टॉस जितने वाला खिलाड़ी यह तय करता है की वह कोर्ट का कौन सा भाग चुनना चाहेगा और पहले सर्व करना चाहेगा या रिसीव।
- बैडमिंटन का मैच 21 प्वाइंट का खेला जाता है तथा ज्यादा पॉइंट वाले खिलाड़ी को जीत दे दी जाती है।
- खेल में एक सर्वर होता है जो पहले शटलकॉक को प्रतिद्वंदी के पाले में मारा जाता है और एक रिसीवर होता है जो पाले में

आ रहे शटलकॉक को रोकता है।

- जब सर्वर सर्व करता है, तब शटलकॉक प्रतिद्वंदी के पाले में शार्ट सर्विस लाइन के पार जाना चाहिए वरना इसे चूक मान लिया जाएगा।
- सर्व करते समय दोनों पालों के खिलाडी अपने पैर को नहीं उठा सकते यानी की एक बार पहला सर्व हो जाए तो शटलकॉक के आधार पर हिट मार सकते हैं।
- एक बार शटलकॉक को हिट करने के बाद उसे दुबारा हिट नहीं किया जा सकता।
- रैकेट का वजन 79 ग्राम से लेकर 91 ग्राम के बीच होता है।

बैडमिंटन खेल के फायदे और नुकसान –

हर खेल के कुछ फायदे और कुछ नुकसान जरुर होते हैं। बैडमिंटन खेल का सबसे बड़ा फायदा यह है की इसे खेलने के लिए ज्यादा जगह की आवश्यकता नहीं पड़ती और यह सस्ता भी है।

इसे कम से कम दो लोगों की सहायता से खेला जाता है इस खेल में अति श्रम की आवश्यकता नहीं रहती इसलिए इसे हर कोई आसानी से खेल सकता है।

बैडमिंटन खेल के नुकसान के रूप में सबसे पहला नुकसान यह है की इसे खुले मैदान जहाँ हवादार मौसम हो मे वहाँ नहीं खेला जा सकता और साथ ही लम्बे समय तक इस खेल से जुड़े रहने के कारण एडियों में अतिरिक्त खिचाव आना शुरू हो जाता है। इसे खेलने के लिए शरीर फुर्तीला और नजरें स्वस्थ होनी चाहिए अगर इनमें क्षति हो तो इस खेल में खेलने में मुश्किल होती है ।

बैडमिंटन का खेल तेजी से लोकप्रिय हुआ है, मनोरंजन के साथ साथ यह खेल कई लोगों का प्रोफेशन बन चुका है. भारतीय बैडमिंटन के सितारे पी वी सिंधु, साइना नेहवाल,पुलेला गोपीचंद,प्रकाश पादुकोण जैसे कई शानदार खिलाड़ियो ने भारत में इस खेल के प्रति लोकप्रियता को और बढ़ाया है. इस खेल को प्रोफेशनल तरीके से बढ़वा देने के लिए भारत में प्रीमियर बैडमिंटन लीग का आयोजन करवाया जाता है ।

लोगों को अपने स्वस्थ्य का ख्याल रखते हुए कुछ न कुछ शारीरिक क्रिया करते रहना चाहिए। और ऐसे–ऐसे खेलों को अपने जीवन में अवश्य शामिल करना चाहिए। यह एक बहुत अच्छा आउटडोर खेल है और एक बार जरुर खेल के देखे, आनंद आता है। लोगों को बाहर पैसे खर्च करने से अच्छा है की वे ऐसे खेल खेलना शुरू कर दें। स्वस्थ्य रहें और प्रसन्न रहें और दूसरों को भी प्रेरित करें की वे खेलें और अपने स्वस्थ्य का स्तर बेहतर करें।

बैडमिंटन से जुड़ी यादें–

मुझे अभी भी बड़े अच्छे से याद है सर्दियों के वे दिन, जब दिन की शुरुआत दो शटल और एक कॉक के साथ हुआ करती थी। समय का पता ही नही चलता था दरसल यह खेल मेरा और मेरे दोस्तों का पसंदीदा खेल हुआ करता था। लेकिन देखा जाये तो अभी भी मेरे जज्बातों में कोई फर्क नहीं पड़ा है। जहाँ दो लोगों को खेलते देखती हूं एक बार हाथ जरुर आजमा लेती हूं, क्या करे मन में लालच आ जाता है। चाहे कुछ भी हो जाये कॉक को अपने पाले में गिरने नहीं देने की कोशिश करती थी और इस चक्कर में कई बार गिर भी जाया करती थी, पर उस दौर में खेल के आगे क्या चोट और क्या बड़ों की डाट, सब सह लेती थी। वाकई यह एक लाजवाब खेल है। और हम सब को इसे जरुर खेलना चाहिए। कुछ अपना कुछ समय जिम में कसरत करते बिताते हैं, पैसे देकर कसरत करने से अच्छा है इस तरह के खेल खेले जाएँ। इससे सबकी सेहत भी ठीक रहती है और अपने बच्चों के साथ समय भी बीता सकते हैं।

कार्यालयीन कार्य में अधिक प्रयोग होने वाले हिंदी वाक्य

प्रस्तुतिः
श्रीमती रेनू, कार्यपालक

क्र.सं.	अंग्रेजी	हिंदी
1.	Accepted For payment	भुगतान के लिए स्वीकृत।
2.	Action has already been taken in the matter	इस मामले में कार्रवाई की जा चुकी है।
3.	Action has not yet been initiated	कार्रवाई अभी शुरू नहीं की गई है।
4.	Action may be taken as proposed.	यथाप्रस्तावित कार्रवाई की जाए।
5.	Administrative approval may be obtained	प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए।
6.	Application may be rejected.	आवेदन अस्वीकार कर दिया जाए।
7.	As per details below.	नीचे लिखे ब्यौरों के अनुसार
8.	Call for an explanation	स्पष्टीकरण मॉगा जाए ।
9.	Call upon to show cause.	कारण बताने को कहा जाए।
10.	Carried forward.	अग्रनीत।
11.	Charge handed over.	कार्याभार सौंप दिया ।
12.	Competent authority's sanction is necessary.	सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी आवश्यक है ।
13.	Consolidated reprott	समेकित रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए।
14.	Day to day administrative work	दैनंदिन प्रशासनिक कार्य।
15.	Deduction at source.	स्त्रोत पर कटौती।
16.	take necessary action./Do the needful.	आवश्यक कार्रवाई करें।
17.	Draft has been amended accordingly	प्रारूप तदनुसार संशोधित कर दिया गया है ।
18.	Draft may now be issued.	प्रारूप अब जारी कर दिया जाए ।
19.	Draft reply is put up for approval.	उत्तर का प्रारूप अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।
20.	Draft on the lines suggested above	ऊपर के सुझावों के आधार पर उत्तर

	may be put up.	का मसौदा प्रस्तुत किया जाए।
21.	Explanation may be called for.	स्पष्टीकरण मॉगा जाए ।
22.	Follow up action.	अनुवर्ती कार्रवाई
23.	For sympathetic consideration.	सहानुभूतिपूर्ण विचार के लिए
24.	I have the honour to say	सादर निवेदन है ।
25.	Issue as amended.	यथा संशोधित भेज दें ।
26.	Issue reminder urgently	तुरंत अनुस्मारक भेजें ।
27.	Issue today.	आज ही भेजें ।
28.	Kindly acknowledge.	कृपया पावती भेजें।
29.	May be informed accordingly.	तदनुसार सूचित कर दिया जाए ।
30.	Necessary notification as per draft placed below for approval.	नीचे रखे मसौदे के अनुसार आवश्यक अधिसूचना अनुमोदनार्थ प्रस्तुत है ।
31.	Needful has been done-	जरूरी कार्रवाई कर दी गई है।
32.	No further action is required.	आगे कोई कार्रवाई अपेक्षित नहीं हैं ।
33.	Office may note it carefully.	कार्यालय इसे सावधानी से नोट कर लें।
34.	Please circulate and file.	कृपया सभी को वितरण कर फाइल कर दें ।
35.	Please see the preceding notes.	कृपया पिछली टिप्पणियां देख लें ।
36.	Please speak.	कृपया बात करें।
37.	The case is re&submitted.	फिर से प्रस्तुत किया जाता है ।
38.	The proposal is self explanatory. It may be accepted.	प्रस्ताव अपने आप में स्पष्ट है। इसे मान लिया जाए ।
39.	The proposal is self explanatory-	प्रस्ताव अपने आप में स्पष्ट है ।
40.	The receipt of the letter has been acknowledged-	पत्र की पावती भेज दी गई है ।
41.	The required papers are placed below.	अपेक्षित कागज–पत्र नीचे रखे हैं ।
42.	We have no remarks to offer-	हमें कोई टिप्पणी नहीं करनी है ।
43.	He should report to the branch as soon as he receives this memorandum.	वे इस ज्ञापन के प्राप्त होते ही तुरंत शाखा में डयूटी पर आ जाएँ ।
44.	We hope that you will not force us; to take untoward steps against you.	आशा है, आप हमें कोई अप्रिय कदम उठाने के लिए बाध्य नहीं करेंगे।

पुस्तकालय

एनएसएफडीसी पुस्तकालय में नई किताबें
New Arrivals in NSFDC Library

पुस्तक परिचर्चा

कहते हैं किताबें सबसे अच्छी दोस्त होती हैं और फ्रांसिस बेकन ने तो यहां तक कहा कि 'कपड़े भले ही पुरानी पहन लो लेकिन किताबें नई पढ़नी चाहिए'।

अभी कोरोना महामारी ने मनुष्य की सोच और जीवन शैली को बहुत ज्यादा प्रभावित किया है ऐसे में भौतिक स्वास्थ्य के साथ–साथ मनुष्य का मानसिक स्वास्थ्य भी प्रभावित हुआ है। इस लिहाज से देखा जाए तो किताबें मनुष्य के मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य में अहम भूमिका निभाती हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए इस बार पुस्तकालय के लिए श्री श्री परमहंस योगानंद की दो आध्यात्मिक पुस्तकें जो जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए अन्तदृष्टि और प्रेरणा से ओतप्रोत है, डेल कारनेगी की अपने जीवन और रोजगार का आनंद कैसे उठाएं, जेम्स क्लियर की एटॉमिक हैबिट्स, साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार से सम्मानित नीलोत्पल मृणाल की औघड़ जो बिहार के ग्रामीण अंचल से रू–ब–रू कराती है, आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। इस कड़ी में हाल ही में प्रकाशित मोदी@20 भी एक उल्लेखनीय किताब है–

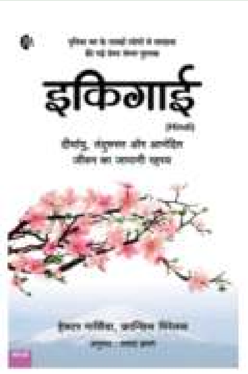

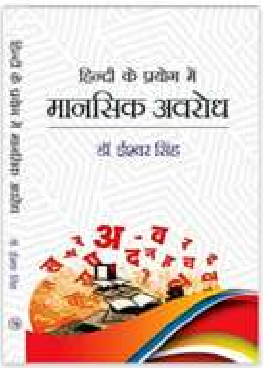

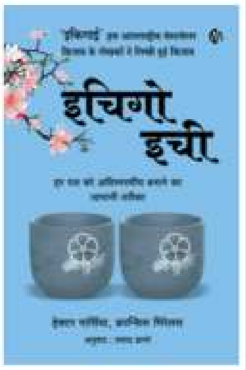

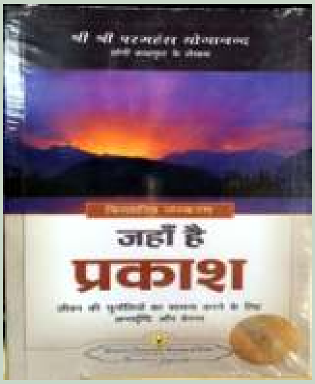

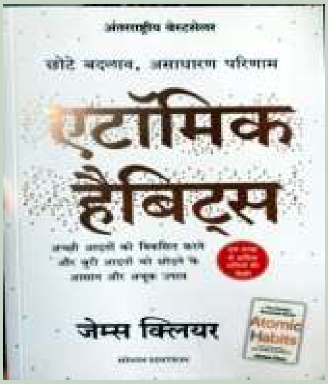

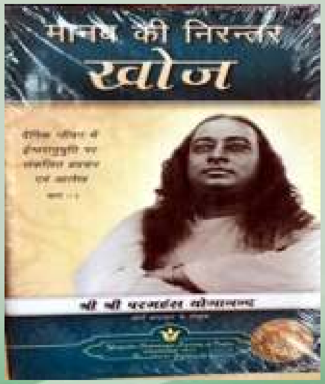

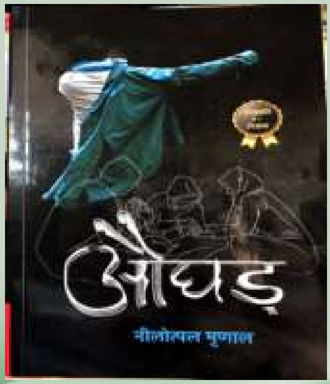

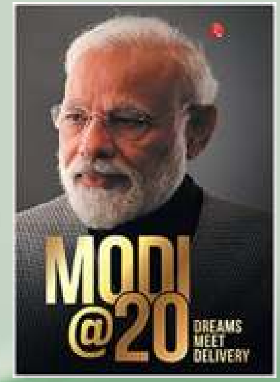

निगम का 34वां स्थापना दिवस

दिनांक 08.02.2022 को प्रधान कार्यालय, दिल्ली में वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में दीप प्रज्वलित कर निगम का 34वां स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर, श्री रजनीश कुमार जैनव, अप्रनि–एनएसएफडीसी ने एनएसएफडीसी परिवार को स्थापना दिवस की बधाई दी। उन्होंने एनएसएफडीसी के सभी सदस्यों के प्रयासों की सराहना की और सामाजिक उत्थान के लिए संगठन का पोषण करने के लिए पूर्व अप्रनि और सभी पूर्व कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया।

दिनांक 8 फरवरी 2022 को निगम 34 वें स्थापना दिवस के अवसर पर, प्रधान कार्यालय, दिल्ली में AU स्मॉल फाइनेंस बैंक के साथ NSFDC और NBCFDC द्वारा एक समझौता–ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया। बैंक द्वारा ई–कॉमर्स पोर्टल विकसित करने के लिए शीर्ष निगमों द्वारा इस एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए थे। यह पोर्टल अनुसूचित जाति और ओबीसी वर्गों के कारीगरों को भारत और विदेशों में अपने उत्पादों की ऑनलाइन बिक्री के लिए सुविधा प्रदान करेगा।

विसवास योजना के कार्यान्वयन के लिए एनएसएफडीसी ने बैंक ऑफ महाराष्ट्र के साथ समझौता–करान पर हस्ताक्षर किया। इस योजना के अंतर्गत अनुसूचित जाति के व्यक्तियों और स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के लिए 5% ब्याज सबवेंशन दिया जाता है।

★★★★★★★★★★

लखनऊ एवं गोरखपुर में निगम द्वारा प्रतिभागिता

प्रस्तुति : कलस्टर विभाग

'आजादी के अमृत महोत्सव' के अंतर्गत लखनऊ में दिनांक 17.12.21 से 22.12.21 के दौरान उत्तर प्रदेश संगीत एवं नाट्य एकेडमी, गोमती नगर, लखनऊ के परिसर में स्वदेशी जागरण मंच के तत्वाधान में 'स्वदेशी मेला' आयोजित किया गया था जिसमें NSFDC द्वारा भाग लिया गया था। मुझे इस प्रदर्शनी के लिए नामित किया गया था। प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य स्वदेशी निर्मित वस्तु का प्रदर्शनी–सह–बिक्री को प्रोत्साहित करना था। प्रदर्शनी का उद्घाटन माननीय श्री केशव प्रसाद मौर्य, उप मुख्य मंत्री, उत्तर प्रदेश द्वारा किया गया जबकि धन्यवाद ज्ञापन संगठन के महामंत्री श्री कश्मीरी लाल जी द्वारा किया गया। प्रदर्शनी का समय प्रातरू 10.00 बजे से रात्रि 10.00 बजे तक था। प्रदर्शनी में मुख्य रूप से खादी ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा उत्पादित वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया था। इसके अतिरिक्त प्रदर्शनी में देश के अन्य भागों से आए हुए कलाकारों ने भी हस्त निर्मित वस्तुओं का प्रदर्शन–सह–बिक्री किया। प्रदर्शनी में राजस्थान का प्रसिद्ध हस्त निर्मित वस्तु, बिहार से मधुबनी पेंटिग, असम का बॉस निर्मित वस्तु, मध्य पदेश से साड़ी एवं कारपेट से निर्मित वस्तु एवं तिलकुट आदि का बिक्री–सह प्रदर्शनी का मुख्य आकर्षण था। प्रदर्शनी में प्रतिदिन हजारों दर्शक भेंट देते थे। प्रदर्शनी में निगम की तरफ से स्टॉल लगाकर मैने निगम की योजनओं का प्रचार–प्रसार किया।

इसी तरह गोरखपुर में भी दिनांक 24.12.21 से 26.12.21 के दौरान आयोजित 'उज्जवल उत्तर प्रदेश, गोरखपुर–2021' प्रदर्शनी में निगम की ओर से मैंने भाग लिया था। यह प्रदर्शनी गोरखपुर के सर्किट हाउस के न्यू एनेक्सी में आयोजित की गई थी। प्रदर्शनी का उदघाटन दिनांक 25.12.2021 को स्थानीय माननीय सांसद श्री रवि किशन जी द्वारा किया गया। यह प्रदर्शनी विशेष रूप से शैक्षणिक प्रदर्शनी थी जिसमें भारत सरकार के अनेक मंत्रालय यथा न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड, स्पाईस बोर्ड, नेशनल रिसर्च विकास निगम, केवीआईसी, वी.वी. गिरी नेशनल लेबर संस्थान आदि ने भाग लिया । प्रदर्शनी में गोरखपुर स्थित विभिन्न स्कूल के 200–500 छात्र प्रतिदिन आते थे जिन्हें विभागों द्वारा चलायी जा रही योजनाओं से अवगत कराया जाता था। मंत्रालय की ओर से नेशनल बैकवर्ड कार्पोरेशन एवं नेशनल ट्रस्ट ने भी हिस्सा लिया एवं प्रदर्शनी में आने वाले विद्यार्थियों को निगम द्वारा संचालित योजनाओं के बारे में मेरे द्वारा विस्तृत जानकारी दी गयी।

पुगल, बीकानेर (राजस्थान) में टूलकिट वितरण

गदरा रोड से हमें पुगल (बीकानेर), राजस्थान में कशीदाकारी से जुडी 100 महिला शिल्पकारों को दिनांक 24.01.22 को टूलकिट के रुप में Motorized सिलाई मशीन का वितरण करने के लिए प्रस्थान करना था । परन्तु अ.प्र.नि. महोदय कोविड–19 से ग्रस्त हो गए और उन्हें दिल्ली प्रस्थान करना पड़ा। 'The Show must go on', इस भाव का अनुसरण करते हुए अ.प्र.नि. महोदय ने मुझे तथा सहायक महाप्रबंधक (प्रोटोकॉल) को बीकानेर जाने तथा कार्यक्रम को सफलतापूर्वक आयोजन करने के निर्देश दिए। इस कार्यक्रम में राज्य अभिकरण तथा विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) के अधिकारी मंच पर उपस्थित थे। यह कार्यक्रम भारत सरकार द्वारा प्रायोजित "आजादी के अमृत महोत्सव" के अंतर्गत आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य महिला शिल्पकारों को सिलाई मशीन द्वारा अतिरिक्त आमदनी से आत्मनिर्भर तथा सशक्त किया जाना था ।

'जागरूकता एवं ऋण पंजीकरण कार्यक्रम', खुर्जा

दिनांक 17.12.21 को फुलवारी सभागृह में नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कार्पोरेशन (NSFDC), दिल्ली तथा CSIR – CGCRI, खुर्जा केंद्र द्वारा जागरूकता एवं ऋण पंजीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य क्लस्टर विकास के माध्यम से अनुसूचित जाति के कुम्हारों का सामाजिक तथा आर्थिक विकास किया जाना है। यह कार्यक्रम लवी त्रिपाठी, SDM खुर्जा, श्री रजनीश कुमार जैनव, अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक, NSFDC, दिल्ली, श्री अजय कुमार, बीडीओ, खुर्जा, श्री योगेश कुमार, महाप्रबंधक, DIC, श्री मनोज राघव, जिला अध्यक्ष, अखिल भारतीय पंचायत परिषद, श्री विपिन कुमार, टेक्नीकल ऑफिसर, CSIR - CGCRI खुर्जा केंद्र तथा एम पी, व्यास, सहायक महाप्रबंधक, UPSCFDC की मौजूदगी में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्री रजनीश बनकर, सहायक महाप्रबंधक, NSFDC द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में नेहरूपुर, किला, हजरतपुर, मुड़ाकेरा, मछली पुर, ढाकर, किर्रा तथा खुर्जा शहर के 150 से 200 Potters ने भाग लिया तथा करीब 100 से अधिक लोगो ने NSFDC की ऋण योजना का लाभ उठाने के लिए पंजीकरण किया। अंत में SDM महोदया ने खुर्जा मे SGJS में डिप्लोमा कर रहे विद्यार्थियों से वार्तालाप किया। कार्यक्रम का अंत जलपान से हुआ।

एनएसएफडीसी और उत्कर्ष लघु वित्त बैंक के साथ समझौता-ज्ञापन

एनएसएफडीसी ने देश के ग्रामीण क्षेत्रों तक अपनी पहुँच बनाने के लिए विसवास योजना के अंतर्गत एनएसएफडीसी योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए आज (6.1.2022) दिल्ली में अपने मुख्य कार्यालय में उत्कर्ष लघु वित्त बैंक के साथ समझौता ज्ञापन किया।

★★★★★★★★★★★

एनएसएफडीसी सीएसआर पहल

एनएसएफडीसी की सीएसआर पहल के अंतर्गत दिनांक 20 जनवरी, 2022 को कमल सिनेमा के बगल में, सफदरजंग, नई दिल्ली में प्लास्टिक बोतल क्रशिंग मशीन स्थापित की गई थी। श्रीमती मीनाक्षी लेखी, माननीय विदेश राज्य मंत्री, भारत सरकार और श्री रजनीश कुमार जेनाव, अप्रनि– एनएसएफडीसी के गरिमा मयी उपस्थिति में इस प्लास्टिक बोतल क्रशिंग मशीन का उद्घाटन किया। यह मशीन पर्यावरण में प्लास्टिक प्रदूषण के प्रसार को रोकने के लिए लोगों को आकर्षित और प्रोत्साहित करेगी।

नोवेल कोरोनावायरस को फैलने से रोकने के लिए दिनांक 10.01.21 को एनएसएफडीसी प्रधान कार्यालय में सभी कर्मचारियों का आरटीपीसीआर टेस्ट किया गया।

★★★★★★★★★★

भारतरत्न बाबासाहेब डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर की 131वीं जयन्ती

दिल्ली स्थित NSFDC के प्रधान कार्यालय में भारतरत्न बाबासाहेब डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर की 131वीं जयन्ती मनाई गई। जयंती समारोह की अध्यक्षता निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री रजनीश कुमार जैनव जी ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ व सभी ने बाबासाहेब को पुष्पांजली अर्पित की।

कार्यक्रम में बाबासाहेब के जीवन व उनके पंचतीर्थों पर सरकार द्वारा निर्मित डॉक्यूमेंटरी का भी प्रदर्शन किया गया। वर्चुअल माध्यम से NSFDC के संपर्क केंद्रों से जुड़े कर्मचारी व समारोह में उपस्थित सभी ने बाबासाहेब की शिक्षाओं का अनुसरण करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम का संचालन निगम के सहायक महाप्रबंधक श्री रजनीश बनकर ने किया व राष्ट्रगान के साथ समारोह सम्पन्न हुआ!

योग कार्यक्रम

योग कार्यक्रमों हेतु भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा दी गई दो तिथियों (19 अप्रैल 2022 और 13 जून 2022) में से पहली तिथि 19 अप्रैल 2022 को एनएसएफडीसी प्रधान कार्यालय और संपर्क केंद्रों के कार्मिकों हेतु सामान्य योग प्रोटोकॉल एवं योग ब्रेक प्रैक्टीस एप्प की जानकारी दी गई। साथ ही मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, दिल्ली की ओर से योग विशेषज्ञ श्री सत्येंद्र कुमार सिंह जी द्वारा योग से संबंधित व्याख्यान से निगम के सभी कार्मिकों को स्वास्थ्य लाभ हेतु प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त हुई।

★★★★★★★★★★

राजभाषा गतिविधियां

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

छमाही के दौरान निगम के बोर्ड रूम में 'ई–ऑफिस पर हिंदी में कार्य' विषय पर एक पूर्ण दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

राजभाषा कार्यान्वियन समिति की बैठक

निगम के अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक महोदय एवं सभी विभागाध्यक्षों की उपस्थिति में एनएसएफडीसी राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

★★★★★★★★★★★

कौशल प्रशिक्षण और आर्थिक विकास के लिए रियायती ऋण प्राप्त करने हेतु अनुसूचित जातियों के लिए सुनहरा अवसर

एनएसएफडीसी की योजनाएँ

नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कार्पोरेशन (एनएसएफडीसी) की विभिन्न ऋण योजनाओं का लाभ पाने हेतु अनुसूचित जाति के व्यक्ति जिनकी वार्षिक पारिवारिक आय ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में ₹3.00 लाख तक है पात्र हैं। एनएसएफडीसी की योजनाएँ संबंधित राज्य चैनलाइजिंग एजेंसियों (एससीए)/संघ शासित क्षेत्र द्वारा नामित चैनलाइजिंग एजेंसियों, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी), सहकारी बैंकों/समितियों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी-माइक्रो वित्त संस्थान (एनबीएफसी-एमएफआई) के माध्यम से आय अर्जक गतिविधियों के लिए कार्यान्वित की जाती है।

(i) ऋण आधारित/स्व-रोजगार ऋण योजनाएँ

क्र. सं.	योजना	यूनिट लागत	ऋण की अधिकतम सीमा यूनिट लागत का 90%*	वार्षिक ब्याज दर	
				एससीए/सीए	लाभार्थी
1	मियादी ऋण (टीएल)	₹50.00 लाख तक	₹47.50 लाख	3-6%#	6-9%#
2	लघु-ऋण वित्त (एमसीएफ)	₹1.40 लाख तक	₹1.25 लाख	2%	5%
3	महिला समृद्धि योजना (एमएसवाई)	₹1.40 लाख तक	₹1.25 लाख	1%	4%
4	महिला अधिकारिता योजना (एमएवाई)	₹5.00 लाख तक	₹4.50 लाख	2.5%	5.50%
5	लघु व्यवसाय योजना (एलवीवाई)	₹5.00 लाख तक	₹4.50 लाख	3%	6%
6	हरित व्यवसाय योजना (जीबीएस)	₹7.50 लाख तक	₹6.75 लाख	2%	4%
		₹7.50 लाख से अधिक और ₹15.00 लाख तक	₹13.50 लाख	3%	6%
		₹15.00 लाख से अधिक और ₹30.00 लाख तक	₹27.00 लाख	4%	7%
7	शिक्षा ऋण योजना (ईएलएस) (I) पूर्ण कालिक तकनीकी पाठ्यक्रम	₹10.00 लाख अथवा 90%, जो भी कम हो (भारत में अध्ययन के लिए) ₹20.00 लाख अथवा 90%, जो भी कम हो (विदेश में अध्ययन के लिए)		1.5% (पुरुष) 1% (महिला)	4% (पुरुष) 3.5% (महिला)
	(II) वोकेशनल पाठ्यक्रम	₹4.00 लाख (100%)		1.5% (पुरुष) 1% (महिला)	4% (पुरुष) 3.5% (महिला)
8	आजीविका माइक्रो फाइनेंस योजना (एएमवाई)##	₹1.40 लाख तक	₹1.25 लाख	3% (पुरुष) 2% (महिला)	11% (पुरुष) 10% (महिला)
9	उद्यम निधि योजना (यूएनवाई) ###	₹5.00 लाख तक	₹4.50 लाख	4%	12%

* एनएसएफडीसी यूनिट लागत का 90% तक ऋण प्रदान करता है। यह मियादी ऋण, स्माइल और वीईटीएलएस को छोड़कर है, जहां क्रमशः 95%, 97% और 100% ऋण प्रदान करता है। बैंकों के माध्यम से पुनर्वित्त के मामले में, शेष ऋण का 100% एनएसएफडीसी योजनाओं के तहत कवर किया जाता है।

\# प्रति यूनिट एनएसएफडीसी शेयर के आधार पर ब्याज प्रभारित किया जाता है।

\## एनबीएफसी-एमएफआई के माध्यम से कार्यान्वित योजना

\### सहकारी बैंकों/समितियों के माध्यम से कार्यान्वित योजना

(2) गैर-ऋण आधारित योजनाएं (कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम)

- ✔ एनएसएफडीसी लक्ष्य समूह के बेरोजगार युवाओं के लिए अपैरल प्रौद्योगिकी, कंप्यूटर प्रौद्योगिकी, मोबाइल मरम्मत और ऑटोमोबाइल मरम्मत आदि जैसे रोजगारोन्मुखी क्षेत्रों में लघु अवधि के कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम की सुविधा प्रदान करता है।
- ✔ एनएसएफडीसी कौशल प्रशिक्षण हेतु सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा शुरू की गई पीएम – दक्ष योजना को कार्यान्वित कर रहा है।

उपलब्धियां (28.02.2022 तक)

(i)	ऋण आधारित योजनाएं	:	निवल संवितरण : 5509.63 करोड़	कुल लाभार्थी :	14,00,288
(ii)	गैर-ऋण आधारित योजनाएं	:	मंजूर राशि : 245.99 करोड़	प्रशिक्षित प्रशिक्षणार्थी :	1,78,353

विस्तृत जानकारी एनएसएफडीसी की वेबसाइट https://www.nsfdc.nic.in/ पर उपलब्ध है अथवा टोल फ्री नं.1800110396 या ई-मेल:nsfdc-support@nic.in पर संपर्क करें।

अनुविनि
nsfdc

नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन

(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार का उपक्रम)

14वीं मंजिल, स्कोप मीनार, कोर 1 व 2, उत्तरी टॉवर
लक्ष्मी नगर जिला केंद्र, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092
टोल फ्री नंबर : **1800110396**
ई–मेल : support-nsfdc@nic.in, वेबसाइट : www.nsfdc.nic.in

Designed & Printed by : Censer Advt. Pvt. Ltd. www.censer.in (Ph) 9810213218